

गैर-बैंकिंग वित्तीय संस्थाएं

वर्ष 2012-13 के दौरान, गैर-बैंकिंग वित्तीय क्षेत्र में और समेकन हुआ क्योंकि अर्थव्यवस्था में कार्यरत गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (एनबीएफसी) की संख्या कम हो गई। कुल मिलाकर, गैर-बैंकिंग वित्तीय संस्थाओं (एनबीएफआई) के पास पूंजी पर्याप्तता की सहज स्थिति थी। इस क्षेत्र के लचीलेपन को बढ़ाने के लिए रिजर्व बैंक द्वारा कई विनियामक दिशानिर्देश जारी किए गए। रिजर्व बैंक समय-समय पर सार्वजनिक नोटिस जारी करने के अलावा, आउटरीच और संवेदीकरण कार्यक्रम भी आयोजित करता रहा है ताकि आम जनता को व्यक्तियों, अनिगमित निकायों और कंपनियों के काल्पनिक मुनाफे के फर्जी वादों का शिकार होने से सावधान किया जा सके।

1. परिचय

6.1 गैर-बैंकिंग वित्तीय संस्थाएं भिन्न-भिन्न प्रकार की संस्थाओं का एक समूह हैं जो विभिन्न वित्तीय आवश्यकताओं की पूर्ति करती हैं और जिन्हें मोटे तौर पर वित्तीय संस्थाओं (एफआई), गैर बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (एनबीएफसी) और प्राथमिक व्यापारियों (पीडी) के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। इस अध्याय में 2012-13 के दौरान गैर-बैंकिंग वित्तीय संस्थाओं के प्रत्येक खंड से संबंधित वित्तीय कार्यनिष्पादन और सुदृढ़ता संकेतकों का विश्लेषण किया गया है, जिसे निम्नानुसार वर्गीकृत किया गया है। खंड 2 वित्तीय संस्थाओं के वित्तीय कार्यनिष्पादन का विश्लेषण करता है, जबकि खंड 3 में जनता से जमाराशियां स्वीकार करने वाली गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (एनबीएफसी-डी), जमाराशियां स्वीकार न करने वाली प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (एनबीएफसी-एनडी-एसआई) और अवशिष्ट गैर-बैंकिंग कंपनियों (आरएनबीसी) के वित्तीय कार्यनिष्पादन पर चर्चा की गई है। खंड 4 प्राथमिक और द्वितीयक बाजारों में प्राथमिक व्यापारियों के कार्यनिष्पादन का विश्लेषण प्रस्तुत करता है, जबकि अंतिम खंड में समग्र मूल्यांकन किया गया है।

2. वित्तीय संस्थाएं

6.2 मार्च 2013 के अंत में भारतीय रिजर्व बैंक के विनियमन और पर्यवेक्षण में चार वित्तीय संस्थाएं अर्थात् भारतीय निर्यात आयात बैंक (एक्विजि बैंक), राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड), राष्ट्रीय आवास बैंक (एनएचबी) और भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक (सिडबी) थीं (सारणी VI.1)। पांचवीं वित्तीय संस्था यानी भारतीय औद्योगिक निवेश बैंक (आईआईबीआई)

सारणी VI.1: वित्तीय संस्थाओं के स्वामित्व का स्वरूप
(31 मार्च 2013 के अंत में)

संस्था	स्वामित्व	प्रतिशत
1	2	3
एक्विजि बैंक	भारत सरकार	100
नाबार्ड	भारत सरकार	99.3
	भारतीय रिजर्व बैंक	0.7
एनएचबी	भारतीय रिजर्व बैंक	100
सिडबी*	सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक	62.5
	बीमा कंपनियां	21.9
	वित्तीय संस्थाएं	5.3
	अन्य	10.3

*: आईडीबीआई बैंक लिमिटेड (19.2 प्रतिशत), भारतीय स्टेट बैंक (15.5 प्रतिशत) और भारतीय जीवन बीमा निगम (14.4 प्रतिशत) सिडबी के तीन बड़े शेयरधारक हैं।

स्वतः समाप्त होने की प्रक्रिया में है। वित्त मंत्रालय ने 16 सितंबर 2012 को इस आशय की गजट अधिसूचना जारी की थी।

वित्तीय संस्थाओं के परिचालन

वित्तीय संस्थाओं द्वारा स्वीकृत और संवितरित वित्तीय सहायता में कमी

6.3 वित्तीय संस्थाओं द्वारा स्वीकृत और संवितरित वित्तीय सहायता में वर्ष 2012-13 में कमी आई (सारणी VI.2)।

वित्तीय संस्थाओं की आस्तियां और देयताएं

6.4 वर्ष 2012-13 के दौरान सभी चार वित्तीय संस्थाओं के संयुक्त तुलन पत्र का 15.9 प्रतिशत विस्तार हुआ (सारणी VI.3)। देयता पक्ष में 'बांडों और डिबेंचरों' के साथ 'जमाराशियां' कुल देयताओं की 60 प्रतिशत से अधिक थीं। आस्ति के पक्ष में, कुल आस्तियों के लगभग 88.8 प्रतिशत हिस्से में

सारणी VI.2: वित्तीय संस्थाओं द्वारा स्वीकृत और संवितरित वित्तीय सहायता

(राशि रु. बिलियन में)

श्रेणी	राशि				प्रतिशत घटबढ़	
	2011-12		2012-13 अ		2012-13	
	स्वी.	संवि.	स्वी.	संवि.	स्वी.	संवि.
1	2	3	4	5	6	7
(i) अखिल भारतीय सावधि ऋणदाता संस्थाएं*	480.1	474.9	433.4	421.8	-9.7	-11.2
(ii) विशेषीकृत वित्तीय संस्थाएं#	10.9	8.5	7.1	6.2	-34.9	-27.1
(iii) निवेश संस्थाएं@	544.1	519.7	447.8	466.6	-17.7	-10.2
वित्तीय संस्थाओं द्वारा कुल सहायता (i+ii+iii)	1,035.1	1,003.1	888.3	894.6	-14.2	-10.8

अ.: अनंतिम; स्वी.: स्वीकृत; संवि.: संवितरित

*: आईएफसीआई, सिडबी और आईआईबीआई के संबंध में। #: आईवीसीएफ: आईसीआईसीआई वेंचर और टीएफसीआई से संबंधित।

@: एलआईसी और जीआईसी तथा भूतपूर्व सब्सिडियरियों (एनआईए, यूआईआईसी और ओआईसी) से संबंधित।

स्रोत: संबंधित वित्तीय संस्थाएं।

योगदान देने वाला ‘‘ऋण और अग्रिम’’ सबसे बड़ा घटक बना रहा (सारणी VI.3)।

वित्तीय संस्थाओं द्वारा जुटाए गए संसाधन

कम संसाधन जुटाए गए लेकिन विदेशी मुद्रा संसाधनों पर निर्भरता बढ़ी

6.5 वर्ष 2012-13 के दौरान वित्तीय संस्थाओं द्वारा जुटाए गए कुल संसाधनों में पिछले वर्ष की तुलना में कमी आई। जुटाए गए अल्पकालिक और दीर्घकालिक -दोनों प्रकार के संसाधनों

में कमी देखी गई जबकि विदेशी मुद्रा के माध्यम से जुटाए गए संसाधनों में तीव्र वृद्धि हुई (सारणी VI.4)। विदेशी मुद्रा उधार में यह वृद्धि मुख्यतः एक्विजम बैंक से संबंधित थी, क्योंकि वर्ष के दौरान उसकी बाह्य उधारियाँ दोगुनी से अधिक थीं।

6.6 मुद्रा बाजार में, चार वित्तीय संस्थाओं में से, नाबार्ड ने सबसे बड़ी मात्रा में संसाधन जुटाए। इसके बाद एक्विजम बैंक, सिडबी और एनएचबी का स्थान था (सारणी VI.5)। वर्ष 2012-13 के दौरान सभी चार वित्तीय संस्थाओं के लिए मुद्रा बाजार से निधियाँ जुटाने के प्रमुख साधन वाणिज्य पत्र (सीपी) थे।

सारणी VI.3: वित्तीय संस्थाओं की देयताएं और आस्तियां (मार्च के अंत में)

(राशि रु. मिलियन में)

मद	2012	2013	प्रतिशत घटबढ़	मद	2012	2013	प्रतिशत घटबढ़
1	2	3	4	1	2	3	4
देयताएं				आस्तियां			
1. पूंजी	62,000 (1.8)	79,594 (2.0)	28.4	1. नगद और बैंक शेष	67,398 (2.0)	91,802 (2.4)	36.2
2. आरक्षित निधि	4,65,243 (13.8)	4,89,948 (12.6)	5.3	2. निवेश	1,25,589 (3.7)	1,17,610 (3.0)	-6.4
3. बांड और डिबेंचर	10,72,973 (31.9)	12,33,408 (31.6)	15.0	3. ऋण और अग्रिम	29,81,996 (88.7)	34,59,842 (88.8)	16.0
4. जमाराशियां	10,90,780 (32.4)	13,09,191 (33.6)	20.0	4. भुनाए गए/ पुनः भुनाए गए बिल	29,636 (0.9)	42,733 (1.1)	44.2
5. उधारी	4,95,207 (14.7)	5,65,741 (14.5)	14.2	5. अचल आस्तियां	5,364 (0.2)	6,258 (0.2)	16.7
6. अन्य देयताएं	1,77,085 (5.3)	2,20,384 (5.7)	24.5	6. अन्य आस्तियां	1,53,306 (4.6)	1,80,020 (4.6)	17.4
कुल देयताएं/आस्तियां	33,63,288	38,98,265	15.9				

टिप्पणियां: 1. आंकड़े 4 वित्तीय संस्थाओं यथा - एक्विजम बैंक, नाबार्ड, एनएचबी और सिडबी से संबंधित हैं।

2. कोष्ठक में दिए गए आंकड़े कुल देयताओं/आस्तियों के अनुसार प्रतिशत दर्शाते हैं।

स्रोत: एक्विजम बैंक, नाबार्ड और सिडबी की (मार्च अंत की) तथा एनएचबी की (जून अंत की) संबंधित वर्षों की लेखा परीक्षित ऑस्मॉस विवरणियां।

सारणी VI.4: वित्तीय संस्थाओं द्वारा जुटाए गए संसाधन

(राशि रु. बिलियन में)

संस्थाएं	जुटाए गए कुल संसाधन								कुल शेष राशि (मार्च के अंत में)	
	दीर्घावधि		अल्पावधि		विदेशी मुद्रा		कुल		2011-12	2012-13 अ.
	2011-12	2012-13 अ.	2011-12	2012-13 अ.	2011-12	2012-13 अ.	2011-12	2012-13 अ.		
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
एक्विजिब बैंक	88	111	55	59	84	194	227	364	547	645
नाबार्ड	179	174	90	85	-	-	269	259	423	447
एनएचबी	555	87	827	466	-	-	1382	553	607	341
सिडबी	139	98	80	49	20	7	239	154	440	480
कुल	961	470	1052	659	104	201	2117	1330	2016	1913

अ. : अर्नतिम। - निल/नगण्य को सूचित करता है। *: जून के अंत की स्थिति।

टिप्पणी : दीर्घावधि रुपया संसाधनों में बांडों/डिबचरों से जुटाई गई उधार राशियां सम्मिलित हैं जबकि अल्पावधि संसाधनों में वाणिज्यिक पत्र (सीपी), सावधि जमाराशियां, अंतर-कॉर्पोरेट जमाराशियां (आईसीडी), जमा प्रमाणपत्र (सीडी) और सावधि मुद्रा बाजार से प्राप्त उधार राशियां सम्मिलित हैं। विदेशी मुद्रा संसाधनों में मुख्यतः अंतरराष्ट्रीय बाजार में जारी बांड और उधार राशियां सम्मिलित हैं।

स्रोत: संबंधित वित्तीय संस्थाएं।

निधियों के स्रोत और उनका उपयोग

वित्तीय संस्थाओं द्वारा बाह्य स्रोतों से जुटायी गयी निधियों में तीव्र वृद्धि

6.7 2012-13 के दौरान, बाहरी स्रोतों से वित्तीय संस्थाओं द्वारा जुटायी गयी निधियों में 73.4 प्रतिशत वृद्धि हुई, जबकि आंतरिक स्रोतों से जुटायी गयी निधियों में 9.3 प्रतिशत की कमी आयी (सारणी VI.6)। वित्तीय संस्थाओं की निधियों में

‘अन्य’ स्रोतों की हिस्सेदारी दोगुने से अधिक बढ़कर 8.1 प्रतिशत हो गई। निधियों के नियोजन के मामले में, नए नियोजनों की हिस्सेदारी तेजी से घटकर 43.8 प्रतिशत हो गई जबकि अन्य नियोजनों में प्रयुक्त निधियाँ उल्लेखनीय रूप से बढ़कर 28.2 प्रतिशत हो गईं।

सारणी VI.6: वित्तीय संस्थाओं की निधियों के स्रोतों और नियोजन का स्वरूप
(मार्च के अंत में)

(राशि रु. बिलियन में)

मद	2012	2013 अ.	प्रतिशत घटबढ़
1	2	3	4
क. निधियों के स्रोत (i+ii+iii)	4,252 (100)	5,406 (100)	27.1
i. आंतरिक	2,623 (61.7)	2,378 (44.0)	-9.3
ii. बाह्य	1,495 (35.2)	2,592 (48.0)	73.4
iii. अन्य ^०	134.0 (3.2)	436.0 (8.1)	225.4
ख. निधियों का अभिनियोजन (i+ii+iii)	4,252 (100)	5,406 (100)	27.1
i. नए नियोजन	2,739 (64.4)	2,366 (43.8)	-13.6
ii. पहले लिए गए उधार की चुकौती	1,290 (30.4)	1,517 (28.1)	17.6
iii. अन्य नियोजन	222 (5.2)	1,524 (28.2)	586.5
जिनमें से: ब्याज का भुगतान	145 (3.4)	183 (3.4)	26.2

अ. : अर्नतिम

^०: बैंकों तथा रिजर्व बैंक के पास रखी नगदी और शेष राशि सम्मिलित है।

टिप्पणियाँ : 1. यह आंकड़ा एक्विजिब बैंक, नाबार्ड, एनएचबी और सिडबी का है।

2. कोष्ठक में दिए गए आंकड़े कुल का प्रति प्रतिशत दर्शाते हैं।

स्रोत: संबंधित वित्तीय संस्थाएं।

सारणी VI.5: वित्तीय संस्थाओं द्वारा मुद्रा बाजार से जुटाए गए संसाधन
(मार्च 2013 के अंत में)

(राशि रु. बिलियन में)

लिखत	एक्विजिब	नाबार्ड	एनएचबी	सिडबी	कुल
1	2	3	4	5	6
क. कुल	65.2	85.0	11.0	27.3	188.5
i) मीयादी जमा	6.1	0	0.7	6.7	13.5
ii) मीयादी मुद्रा	0	3.1	0	0	3.1
iii) अंतर-कॉर्पोरेटजमाराशियां	0	0	0	0	0
iv) जमा प्रमाणपत्र	6.3	0	0	0	6.3
v) वाणिज्यिक पत्र	52.8	81.9	10.3	20.6	165.6
vi) बैंकों से अल्पावधि ऋण	0	0	38.3	0	38.3
जापन:					
ख. अंब्रेला सीमा	85.8	164.1	47.3	64.0	361.1
ग. अंब्रेला सीमा का उपयोग (ख के प्रतिशत के रूप में क)	76.0	51.8	23.3	42.6	52.2

*: अंब्रेला सीमा के तहत जुटाए गए संसाधनों में क(i) से क(ii) तक शामिल हैं।

स्रोत: वित्तीय संस्थाओं द्वारा प्रस्तुत किए गए आंकड़े।

सारणी VI.7: वित्तीय संस्थाओं द्वारा जुटाए गए रुपया संसाधनों की भारित औसत लागत और परिपक्वता अवधि

संस्थाएं	भारित औसत लागत (प्रतिशत)		भारित औसत परिपक्वता अवधि (वर्ष)	
	2011-12	2012-13 अ.	2011-12	2012-13 अ.
1	2	3	4	5
एक्विजि बैंक	9.0	9.0	2.8	3.5
सिडबी	7.5	7.6	4.9	4.9
नाबार्ड	9.5	9.3	1.9	1.8
एनएचबी	8.8	7.7	0.9	2.9

अ.: अर्न्तम * : जून के अंत की स्थिति।
स्रोत: संबंधित वित्तीय संस्थाएं।

परिपक्वता अवधि तथा उधार लेने और देने की लागत

6.8 2012-13 के दौरान, हालांकि राष्ट्रीय आवास बैंक और नाबार्ड द्वारा जुटाए गए रुपया संसाधनों की भारित औसत लागत (डब्ल्यूएसी) में कमी आयी, लेकिन सिडबी के लिए यह थोड़ी बढ़ी और एक्विजि बैंक के लिए यह 9 प्रतिशत के पिछले स्तर पर बनी रही (सारणी VI.7)। जुटाए गए रुपया संसाधनों की उच्चतम भारित औसत लागत (डब्ल्यूएसी) नाबार्ड के लिए अधिकतम थी और सिडबी के लिए न्यूनतम थी। जहां तक भारित औसत परिपक्वता (डब्ल्यूएमए) का सवाल है, सिडबी की भारित औसत परिपक्वता 4.9 वर्ष के सबसे लंबे समय तक थी, नाबार्ड की भारित औसत परिपक्वता (डब्ल्यूएमए) 1.8 वर्ष की सबसे कम अवधि की थी। वर्ष 2012-13 के दौरान, जहां एक ओर एनएचबी ने अपनी दीर्घकालिक मूल उधार दर (पीएलआर) को कम किया वहीं दूसरी ओर एक्विजि बैंक और सिडबी ने अपनी तदनुसूची मूल उधार दरें अपरिवर्तित रखीं (सारणी VI.8)।

वित्तीय संस्थाओं का वित्तीय कार्य-निष्पादन

ब्याज से इतर आय में वृद्धि की वजह से लाभप्रदता में वृद्धि

6.9 वर्ष 2012-13 के दौरान, वित्तीय संस्थाओं के वित्तीय कार्य-निष्पादन में सुधार हुआ, क्योंकि उनके परिचालन और शुद्ध

सारणी VI.8: चुनिंदा वित्तीय संस्थाओं की दीर्घावधि मूल उधार दर (पीएलआर) संरचना

प्रभावी	(प्रतिशत)		
	एक्विजि बैंक	सिडबी	एनएचबी
1	2	3	4
मार्च 2012	15.0	12.75	10.50
मार्च 2013	15.0	12.75	9.75

स्रोत: संबंधित वित्तीय संस्थाएं

सारणी VI.9: वित्तीय संस्थाओं का वित्तीय निष्पादन

(राशि रु. मिलियन में)

मदें	2011-12	2012-13	घटबढ़	
			राशि	प्रतिशत
क. आय (अ+आ)	2,26,650	2,75,010	48,360	21.34
अ) ब्याज से आय	2,16,887 (95.7)	2,60,884 (94.9)	43,997	20.3
आ) गैर-ब्याज आय	9,764 (4.3)	14,126 (5.1)	4,362	44.7
ख. व्यय (अ+आ)	1,62,933	1,99,626	36,693	22.50
अ) ब्याज पर व्यय	1,48,850 (91.4)	1,83,811 (92.1)	34,961	23.5
आ) परिचालन व्यय	14,082 (8.6)	15,815 (7)	1,733	12.3
जिनमें से: वेतन बिल	10,193	11,154	961	9.4
ग. कराधान के लिए प्रावधान	16,170	17,486	1,316	8.1
घ. लाभ				
परिचालन लाभ (पीबीटी)	48,810	55,863	7,053	14.5
निवल लाभ (पीएटी)	32,640	38,377	5,737	17.6
ड. वित्तीय अनुपात @				
परिचालन लाभ	1.8	1.5	-	-
निवल लाभ	1.0	1.1	-	-
आय	7.1	7.6	-	-
ब्याज से आय	6.8	7.2	-	-
अन्य आय	0.3	0.4	-	-
व्यय	5.1	5.5	-	-
ब्याज पर व्यय	4.0	5.1	-	-
अन्य परिचालन व्यय	0.4	0.4	-	-
वेतन बिल	0.3	0.3	-	-
प्रावधान	0.5	0.5	-	-
स्प्रेड (निवल ब्याज आय)	2.1	2.1	-	-

पीबीटी : कर पूर्व लाभ, पीएटी : करोत्तर लाभ

@: कुल औसत आस्तियों के प्रतिशत के रूप में।

टिप्पणियां : कोष्ठक में दिए गए आंकड़े कुल आय/व्यय के प्रति प्रतिशत हैं।

स्रोत: एक्विजि बैंक, नाबार्ड और सिडबी की (मार्च के अंत की) और एनएचबी की (जून के अंत की) संबंधित वर्षों की लेखा परीक्षित ऑस्मॉस विवरणियां।

-दोनों मुनाफों में वृद्धि हुई। वर्ष 2012-13 के दौरान वित्तीय संस्थाओं के परिचालनगत खर्चों की वृद्धि में मुख्य रूप से उच्च वेतन बिल की भूमिका रही (सारणी VI.9)। वर्ष 2012-13 के दौरान सभी वित्तीय संस्थाओं की आस्तियों पर प्रतिफल (आरओए) लगभग स्थिर बना रहा। वित्तीय संस्थाओं के बीच, सिडबी का आस्तियों पर प्रतिफल (आरओए) उच्चतम रहा, उसके बाद एनएचबी, एक्विजि बैंक और नाबार्ड का स्थान रहा (सारणी VI.10)।

सारणी VI.10: वित्तीय संस्थाओं के चुनिंदा वित्तीय मानदंड
(मार्च अंत के अनुसार)

संस्था	ब्याज से आय/औसत कार्यकारी निधियां (प्रतिशत)		गैर-ब्याज आय/औसत कार्यकारी निधियां (प्रतिशत)		परिचालन लाभ/ औसत कार्यकारी निधियां (प्रतिशत)		औसत आस्तियों पर प्रतिलाभ (प्रतिशत)		प्रति कर्मचारी निवल लाभ (रु. मिलियन)	
	2012	2013	2012	2013	2012	2013	2012	2013	2012	2013
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
एक्विजि बैंक	7.1	7.9	0.6	0.5	2.5	2.4	1.1	1.1	26.7	27.0
नाबार्ड	6.5	6.9	0.1	0.1	1.4	1.5	1.0	0.9	3.6	4.1
एनएचबी*	8.6	8.5	0.0	0.1	2.1	2.2	1.4	1.1	40.7	48.4
सिडबी	8.5	8.6	0.2	0.3	3.4	3.4	2.0	2.0	5.5	7.9

*: क्रमशः जून अंत की स्थिति के अनुसार.

स्रोत: वित्तीय संस्थाओं द्वारा प्रस्तुत विवरणियां।

सुदृढ़ता संकेतक

आस्ति गुणवत्ता

वर्ष के दौरान क्षत आस्तियों में वृद्धि

6.10 पिछले वर्ष की तुलना में, मुख्य रूप से एक्विजि बैंक, सिडबी और एनएचबी के उच्चतर निवल एनपीए के कारण वित्तीय संस्थाओं की निवल अनर्जक आस्तियों (एनपीए) के समग्र स्तर में वृद्धि हुई। सिडबी के पास निवल अनर्जक आस्तियों की सबसे बड़ी मात्रा थी उसके बाद एक्विजि बैंक और राष्ट्रीय आवास बैंक का स्थान था। वित्तीय संस्थाओं में नाबार्ड की अनर्जक आस्तियां सबसे कम थीं और वास्तव में वर्ष के दौरान उसके एनपीए की स्थिति में सुधार आया (सारणी VI.11)। एनएचबी के संबंध में निवल अनर्जक आस्तियों में हुई वृद्धि, पुनर्गठित ऋण खातों को 'अव-मानक' आस्ति के रूप में वर्गीकृत किये जाने के कारण थी (सारणी VI.12)।

6.11 वर्ष 2012-13 के दौरान, जबकि वित्तीय संस्थाओं की कुल हानि वाली आस्तियों में गिरावट आयी लेकिन अव-मानक

सारणी VI.11: वित्तीय संस्थाओं की निवल अनर्जक आस्तियां
(मार्च के अंत में)

(राशि रु. मिलियन में)

संस्था	निवल अनर्जक आस्तियां		निवल अनर्जक आस्तियां/निवल ऋण (प्रतिशत)	
	2012	2013	2012	2013
1	2	3	4	5
एक्विजि बैंक	1,558	3,047	0.29	0.47
नाबार्ड	371	237	0.02	0.01
एनएचबी*	0	1,561	0.00	0.45
सिडबी	1,847	3,073	0.36	0.55
सभी वित्तीय संस्थाएं	3,776	7,917	0.13	0.23

*: जून के अंत की स्थिति।

स्रोत: एक्विजि बैंक, नाबार्ड और सिडबी की (मार्च के अंत की) और एनएचबी की (जून के अंत की) संबंधित वर्षों की लेखा परीक्षित निगरानी और चौकसी प्रणाली (ऑस्मांस) विवरणियां।

तथा संदिग्ध आस्तियों की मात्रा में वृद्धि हुई। एक्विजि बैंक और सिडबी की अव-मानक आस्तियों में वृद्धि हुई जबकि नाबार्ड की इन आस्तियों में काफी गिरावट आई।

सारणी VI.12: वित्तीय संस्थाओं की आस्ति का वर्गीकरण
(मार्च के अंत में)

(राशि रु. मिलियन में)

संस्था	मानक		अवमानक		संदिग्ध		हानि	
	2012	2013	2012	2013	2012	2013	2012	2013
1	2	3	4	5	6	7	8	9
एक्विजि बैंक	5,37,340	6,40,483	4,044	8,545	3,871	6,559	44	44
नाबार्ड	16,49,324	19,51,980	221	8	682	1,093	10	10
एनएचबी*	2,85,159	3,44,671	0	1,806	0	34	0	0
सिडबी	5,36,034	5,57,606	2,123	4,477	385	352	1,227	713
सभी वित्तीय संस्थाएं	30,07,857	34,94,740	6,388	14,836	4,938	8,038	1,281	767

*: जून के अंत की स्थिति।

स्रोत: एक्विजि बैंक, नाबार्ड और सिडबी की (मार्च के अंत की) और एनएचबी की (जून के अंत की) संबंधित वर्षों की लेखा परीक्षित ऑस्मांस विवरणियां।

सारणी VI.13: वित्तीय संस्थाओं की जोखिम भारित आस्तियों की तुलना में पूंजी का अनुपात
(मार्च के अंत में)

संस्था	2012	2013
1	2	3
एक्विजि बैंक	16.4	15.3
नाबार्ड	20.6	18.3
एनएचबी*	19.7	16.7
सिडबी	29.2	28.2

*: जून के अंत की स्थिति।

स्रोत : एक्विजि बैंक, नाबार्ड और सिडबी की (मार्च के अंत की) और एनएचबी की (जून के अंत की) संबंधित वर्षों की लेखा परीक्षित ऑस्मांस विवरणियां।

पूंजी पर्याप्तता

वित्तीय संस्थाओं के संबंध में पूंजी पर्याप्तता की स्थिति संतोषजनक रही

6.12 वर्ष 2012-13 में सभी वित्तीय संस्थाओं का सीआरएआर पिछले वर्ष की तुलना में कम था। तथापि, सभी चार वित्तीय संस्थाओं ने 9 प्रतिशत के न्यूनतम निर्धारित मानदंड से अधिक सीआरएआर बनाए रखा (सारणी VI.13)।

3. गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियां

6.13 देयता ढांचे के आधार पर गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों को दो श्रेणियों में रखा गया है अर्थात् - श्रेणी 'क' की कंपनियां (जनता से जमाराशियां लेने वाली गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियां या एनबीएफसी-डी), और श्रेणी 'ख' की कंपनियां (जनता से जमाराशियां न जुटाने वाली एनबीएफसी या एनबीएफसी-एनडी)। एनबीएफसी-डी पूंजी पर्याप्तता संबंधी अपेक्षाओं, चलनिधि आस्तियों को बनाए रखना एक्सपोजर संबंधी मानदंड (भूमि, भवन और अनकोटेड शेयरों में निवेश संबंधी एक्सपोजर पर पाबंदी सहित), आस्ति देयता प्रबंधन अनुशासन और रिपोर्टिंग अपेक्षाओं के अधीन हैं। इसके विपरीत श्रेणी 'ख' कंपनियां, 2006 तक न्यूनतम रूप से विनियमित थी। हालांकि, 1 अप्रैल, 2007 के बाद से, ₹1 बिलियन और उससे अधिक की आस्तियों वाली जनता से जमाराशियां स्वीकार न करने वाली गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों को जमाराशियां न लेने वाली प्रणालीगत दृष्टि से महत्वपूर्ण गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों के रूप में वर्गीकृत किया गया है और विवेकपूर्ण विनियमनों जैसे पूंजी पर्याप्तता अपेक्षाओं, एक्सपोजर मानदंड और रिपोर्टिंग अपेक्षाओं को उन पर लागू किया गया है। पूंजी बाजार जोखिम (सीएमई) और आस्ति देयता प्रबंधन (एएलएम) रिपोर्टिंग और प्रकटन संबंधी मानदंड भी उन पर समय-समय लागू किये गये हैं।

6.14 किये जानेवाले कार्यकलापों के अनुसार, गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (एनबीएफसी) को निम्नानुसार आठ श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है नामतः आस्ति वित्त कंपनियां (एएफसी), निवेश कंपनियां (आईसी), ऋण कंपनियां (एलसी), इंफ्रास्ट्रक्चर फाइनेंस कंपनियां (आईएफसी), कोर निवेश कंपनियां (सीआईसी), आधारभूत संरचना ऋण निधि - गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियां (आईडीएफ-एनबीएफसी), गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनी - माइक्रो फाइनेंस संस्थाएं (एनबीएफसी, एमएफआई) और गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनी - फैक्टर्स (एनबीएफसी-फैक्टर्स)।

6.15 2012-13 के दौरान, गैर-बैंकिंग वित्तीय काल्पनिक कंपनियों के विनियमन और पर्यवेक्षण में सुधार लाने के लिए विभिन्न नीतिगत उपाय शुरू किए गए (अध्याय III देखें)। रिजर्व बैंक व्यक्तियों, अनिगमित निकायों और कंपनियों द्वारा काल्पनिक मुनाफे के फर्जी वादों के शिकार होने से आम जनता को सावधान करने हेतु रिजर्व बैंक समय-समय पर सार्वजनिक नोटिस जारी करने के अलावा, आउटरीच और संवेदीकरण कार्यक्रमों का भी आयोजन करता रहा है। इसके अलावा, रिजर्व बैंक ने जनता को यह भी सूचित किया है कि वे एनबीएफसी के पास राशि जमा करते समय अपने निवेश संबंधी निर्णयों का सावधानीपूर्वक मूल्यांकन करें। रिजर्व बैंक ने यह भी स्पष्ट किया है कि वह चिट फंड गतिविधियों या सामूहिक निवेश योजनाओं (सीआईएस) को विनियमित नहीं करता है। यह उन गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों को विनियमित करता है, जो अपने प्रमुख व्यवसाय के रूप में वित्तीय गतिविधियों का संचालन करती हैं और उनमें से केवल कुछ ही को जमाराशियां स्वीकार करने के लिए प्राधिकृत किया गया है तथा ऐसी संस्थाओं को निक्षेप बीमा और प्रत्यय गारंटी निगम की जमा बीमा सुविधा का लाभ नहीं मिलता है।

6.16 हाल ही के वैश्विक वित्तीय संकट के बाद, शैडो बैंकिंग प्रणाली का संचालन कई अर्थव्यवस्थाओं के विनियामकों की जांच के दायरे में आ गया है। विकसित अर्थव्यवस्थाओं और अन्य ईएमई में प्रचलित शैडो बैंकिंग का रूप भारत में प्रचलित रूप से काफी अलग है। गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियां जो बैंकों पर लागू विनियामक ढांचे से बाहर रहती हैं, भारत में मूलतः उनका उल्लेख शैडो बैंकिंग के रूप में किया जाता है (बॉक्स VI.1)।

6.17 मार्च 2013 के अंत तक एनबीएफसी-एनडी-एसआई और जमाराशियां स्वीकार करने वाली गैर बैंकिंग वित्तीय कंपनियों की स्वामित्व संरचना के अनुसार यह पाया गया है कि उनमें से अधिकांश गैर-सरकारी सार्वजनिक लिमिटेड कंपनियां हैं (सारणी VI.14)।

बॉक्स VI.1 : भारत में शैडो बैंकिंग : कुछ मुद्दे

हाल ही के वैश्विक वित्तीय संकट ने शैडो बैंकिंग की भूमिका और संबंधित मुद्दों पर बहस शुरू कर दी है। शैडो बैंकिंग ऐसी प्रणाली है, जिसमें वित्तीय संस्थाएं (जैसे कि मुद्रा बाजार संस्थाएं, निजी ईक्विटी फंड, हेज फंड, प्रतिभूतिकरण कंपनियां, योजनाबद्ध निवेश साधन आदि) बैंकों की भांति ऋण मध्यस्थता गतिविधियां करती हैं, लेकिन पारंपरिक विनियामक व्यवस्था से बाहर रहती हैं, जो अन्यथा बैंकों पर लागू होती हैं। 2007 में, पॉल मैकली ने "शैडो बैंक" शब्द गढ़ा, जो मुख्यतः यूएस में परिपक्वता अवधि को बदलने वाली (अल्पावधि जमाराशियों का प्रयोग दीर्घावधि ऋणों का वित्तपोषण करने के लिए) गैर-बैंक वित्तीय संस्थाओं के लिए प्रयोग किया गया था। वित्तीय स्थिरता बोर्ड ने "शैडो बैंक" को विनियामक बैंकिंग प्रणाली से बाहर ऋण मध्यस्थता वाली संस्थाएं और गतिविधियों (पूर्णतया या आंशिक रूप से) के रूप में परिभाषित किया था। यह अनुमान लगाया गया है कि 2011 के अंत में वैश्विक शैडो बैंकिंग प्रणाली 67 ट्रिलियन डॉलर की हो सकती है, जो कुल वित्तीय मध्यस्थता का 25 प्रतिशत है (एफएसबी, 2012)। एफएसबी (2012) की एक रिपोर्ट के अनुसार शैडो बैंकिंग प्रणाली (एनबीएफआई/ओएफआई) की सबसे ज्यादा उपस्थिति नीदरलैंड में है (45 प्रतिशत), उसके बाद यूएसए (35 प्रतिशत), हांगकांग (लगभग 35 प्रतिशत), यूरो क्षेत्र (30 प्रतिशत), स्विट्जरलैंड, यूके, सिंगापुर तथा कोरिया (सब लगभग 25 प्रतिशत) का स्थान है।

कारोबारी मॉडल, लिवरेज स्थिति, स्वामित्व आदि के संबंध में शैडो बैंकिंग के काम करने का तरीका पारदर्शी नहीं है, जिसके चलते यह विनियामक फ्रेमवर्क के अनुकूल नहीं है। चूंकि शैडो बैंक संस्थाएं केंद्रीय बैंक फंडिंग या जमाराशि बीमा जैसे सुरक्षा नेट से बाहर होती हैं इसलिए उन्हें आघात लगने का खतरा बना रहता है, जिसके चलते उनके आकार और औपचारिक वित्तीय प्रणाली के साथ अंतर-सम्बद्धता के आधार पर प्रणालीगत जोखिम उत्पन्न हो जाता है। हालांकि त्वरित, मांग के अनुसार, किफायती तथा ऋण और चलनिधि उपलब्ध कराने के एक वैकल्पिक स्रोत के रूप में शैडो बैंकिंग प्रणाली की काफी अच्छाइयां हैं, लेकिन प्रणालीगत संकट उत्पन्न करने की इसकी क्षमता, जो हाल ही के वैश्विक वित्तीय संकट में देखी गई, को नकारा नहीं जा सकता।

हाल ही के वैश्विक वित्तीय संकट से पहले के वर्षों में, ये संस्थाएं वित्तीय गतिविधियों/लिखतों के नए अवतारों में दिखाई दीं, जो विभिन्न निवेशकों की जोखिम लेने की बढ़ती प्रवृत्ति को पूरा करने के लिए सीमा पार तक चली गईं। शैडो बैंकिंग गतिविधियों का विस्तार उनसे जुड़े जोखिमों के प्रति उदासीन था। निम्नलिखित कारणों से शैडो बैंकिंग के अस्तित्व के कारण वैश्विक वित्तीय संकट के आकार में वृद्धि आरंभ होने लगी। पहला, नियमित बैंकिंग और शैडो बैंकिंग प्रणालियों के बीच परस्पर सम्बद्धता बढ़ गई थी क्योंकि बैंक इन संस्थाओं को उधार दे रहे थे। इन संस्थाओं द्वारा जारी उत्पादों ने बैंकों की लीवरेज की स्थिति बढ़ा दी और उन्हें उच्चतर जोखिम की स्थिति में ला दिया। दूसरा, विनियमन का लगभग अभाव होने के कारण शैडो बैंकिंग प्रणाली अपने जोखिम की सही लागत को आत्मसात नहीं करते हुए कार्य करती रही तथा एकाधिक संस्थाओं ने (बैंकों सहित) शैडो बैंकिंग के रूप को तरजीह दी जो बैंकिंग विनियमों में गतिरोध पैदा करती थीं। इस प्रकार के विनियामक आरबिट्रेज से पूरी प्रणाली में लीवरेज और जोखिम और अधिक बढ़ा हो गया। तीसरा, चूंकि शैडो बैंक फंडिंग-जैसी अल्पावधि जमाराशियों पर ज्यादा निर्भर थे, जिन्हें जमाराशि बीमा की सुविधा प्राप्त नहीं थी, विश्वास की कमी हो जाने से इन अविनियमित संस्थाओं का 'विघटन (रन)' शुरू हो गया।

हालांकि वित्तीय नवोन्मेषी उत्पादों के माध्यम से शैडो बैंकिंग की भूमिका ने आर्थिक कुशलताओं का निर्माण किया, लेकिन संकट ने यह दिखा दिया कि शैडो

बैंकिंग से पारंपरिक बैंकों और पूंजी बाजारों के बीच परस्पर प्रतिकूल प्रभाव और प्रणालीगत जोखिम संचार के नए चैनल बन गए। इसलिए वैश्विक स्तर पर यह महसूस किया गया कि ऐसी अविनियमित संस्थाओं को किसी विनियामक संगठन के अधीन लाया जाए। यूनाइटेड स्टेट्स ने 2010 में डॉड-फ्रैंक अधिनियम पारित किया, जिससे प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण सभी संस्थाओं का विनियमन करने के लिए फेडरल रिजर्व के हाथ मजबूत हुए। निरंतर बढ़ती शैडो बैंकिंग गतिविधियों पर नियंत्रण लगाने के लिए, यूरोपीय संघ ने कुछ उपाय किए हैं जिनमें, अन्य बातों के साथ-साथ, प्रतिभूतिकरण के संबंध में विवेकपूर्ण नियम, साख निर्धारण एजेन्सियों का विनियमन आदि शामिल है। इसके अतिरिक्त, जी-20 देशों के अनुरोध पर, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शैडो बैंकिंग प्रणाली पर निगरानी रखने और उनके विनियमन को सुदृढ़ करने के लिए एफएसबी ने नीतियां बनायी हैं ताकि उनसे उत्पन्न होने वाले जोखिमों को कम किया जा सके।

भारत में, गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियां, जो बैंकिंग विनियामक फ्रेमवर्क से बाहर रहते हुए बैंक की तरह ऋण मध्यस्थता गतिविधियां करती हैं, शैडो बैंकिंग प्रणाली को ही दिखलाती हैं (सिन्हा, 2013)। विकसित देशों में जिस प्रकार की शैडो बैंकिंग प्रणाली उपलब्ध है (उदाहरण के लिए हेज फंड, स्वामित्व निधियां, विशेष निवेश साधन और लिवरेज्ड निधियां) वह मुख्यतः भारतीय संदर्भ में सम्बद्ध नहीं है। भारत मूलतः बैंकों की प्रधानता वाली एक वित्तीय प्रणाली है, जिसमें वित्तीय क्षेत्र की आस्तियों का 60 प्रतिशत हिस्सा बैंकों के पास है। 31 मार्च 2012 की स्थिति के अनुसार अन्य वित्तीय मध्यस्थों की कुल आस्तियां बैंकों की आस्तियों का लगभग 24 प्रतिशत हैं, जबकि एनबीएफसी क्षेत्र की आस्तियां लगभग 12 प्रतिशत हैं, जिससे शैडो बैंकिंग प्रणाली में एनबीएफसी की महत्ता का पता चलता है (सिन्हा ओपी.सीआईटी.)। इस प्रकार, अन्य उन्नत अर्थव्यवस्थाओं की तुलना में भारत में शैडो बैंकिंग का आकार और गतिविधियां कम हैं। इसके अतिरिक्त, कई अन्य देशों के विपरीत भारत में एनबीएफसी के लिए एक सुपरिभाषित विनियामक फ्रेमवर्क उपलब्ध है और कालांतर ने प्रगतिशील और विवेकपूर्ण विनियामक उपायों से इस क्षेत्र में मजबूती आई है। हालांकि, 2008 में वैश्विक वित्तीय संकट ने एनबीएफसी, म्युचुअल फंडों और वाणिज्य बैंकों के बीच परस्पर संबंध आधारित फंडिंग के कारण देश में एनबीएफसी क्षेत्र पर कुछ दबाव पड़ा। लेकिन संकट ने एनबीएफसी क्षेत्र के सम्मुख कुछ विनियामक मुद्दों को प्रकाश में ला दिया, विशेषकर विनियामक कमियों, आरबिट्रेज तथा परस्पर सम्बद्धता के कारण उत्पन्न जोखिमों को। यथोचित विनियामक उपायों द्वारा इन पर निरंतर कार्रवाई की जा रही है। हाल ही में, रिजर्व बैंक ने भारत में शैडो बैंकिंग क्षेत्र के संबंध में एक कार्यकारी दल भी गठित किया है। आशा है कि यह कार्यकारी दल यथोचित समय में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत कर देगा।

संदर्भ

फाइनेंसियल स्टेबिलिटी बोर्ड (2011) : "शैडो बैंक" : स्कोपिंग दि इश्यूज, ए बेंकग्राउंड' नोट ऑफ दि फाइनेंसियल स्टेबिलिटी बोर्ड।

फाइनेंसियल स्टेबिलिटी बोर्ड (2012): ग्लोबल "शैडो बैंकिंग" मॉनिटरिंग रिपोर्ट 2012।

आनंद सिन्हा, (2013): रेगुलेशन ऑफ शैडो बैंकिंग- इश्यूज एंड चैलेंजेज, रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया बुलेटिन, मार्च।

सारणी VI.14: एनबीएफसी-डी और एनबीएफसी-एनडी-एसआई के स्वामित्व का स्वरूप (मार्च 2013 के अंत में)

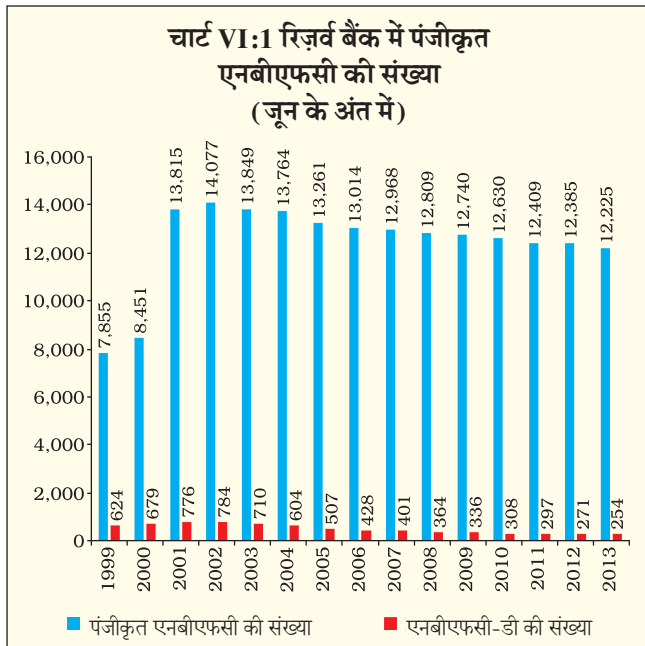
स्वामित्व	(कंपनियों की संख्या)	
	एनबीएफसी-एनडी-एसआई	एनबीएफसी - डी
1	2	3
क. सरकारी कंपनियां	9 (2.2)	7 (2.8)
ख. गैर-सरकारी कंपनियां (1+2)	409 (97.8)	247 (97.2)
1. पब्लिक लिमिटेड कंपनियां	218 (52.2)	245 (96.5)
2. प्राइवेट लिमिटेड कंपनियां	191 (45.7)	2 (0.8)
कंपनियों की कुल संख्या (क+ख)	418 (100.0)	254 (100.0)

टिप्पणी: कोष्ठक में दिए गए आंकड़े कुल संख्या का प्रतिशत दर्शाते हैं।

गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों का प्रोफाइल (आरएनबीसी सहित)

गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों के खंड में समेकन हो रहा है।

6.18 रिजर्व बैंक के पास पंजीकृत गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों की कुल संख्या जून 2013 के अंत में थोड़ा घटकर 12,225 रह



सारणी VI.15: जमाराशि स्वीकार करने वाली गैर बैंकिंग वित्तीय कंपनियों की स्वरूपा

(राशि रु. बिलियन में)

मद	मार्च के अंत में			
	2012		2013 अ.	
	एनबीएफसी	जिसमें से : आरएनबीसी	एनबीएफसी	जिसमें से : आरएनबीसी
1	2	3	4	5
कुल आस्तियां	1,298	75 (5.8)	1,322	73 (5.5)
सार्वजनिक जमाराशियां	100	43 (42.8)	106	35 (33.1)
निवल स्वाधिकृत निधियां	249	31 (12.4)	250	31 (12.3)

अ. : अनंतिम

टिप्पणी : 1. कोष्ठक में दिए गए आंकड़े संबंधित जोड़ के प्रतिशत हिस्से हैं।

2. 209 एनबीएफसी-डी तथा दो आरएनबीएफसी द्वारा प्रस्तुत की गई वार्षिक विवरणियों पर आधारित।

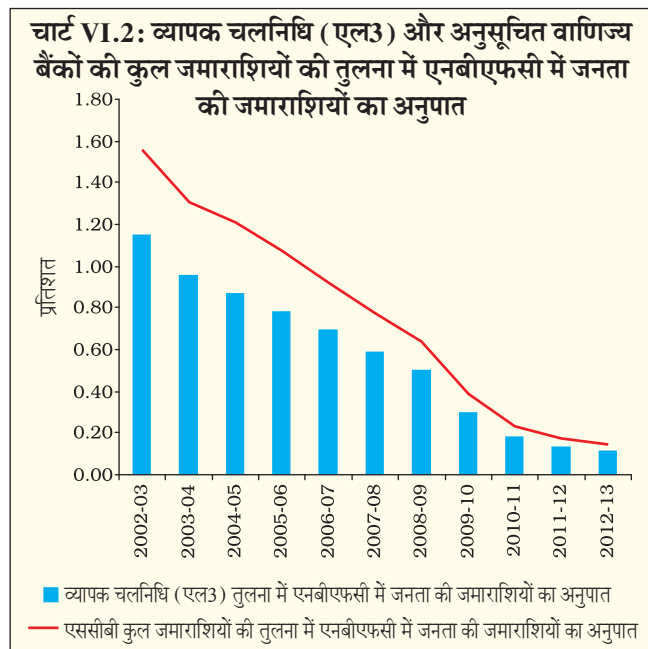
स्रोत: वार्षिक/ तिमाही विवरणियां

गई (चार्ट VI.1)। वर्ष 2012-13 के दौरान एनबीएफसी-डी की संख्या मुख्य रूप से पंजीकरण प्रमाणपत्र (सीओआर) रद्द करने तथा उनके जमाराशियां स्वीकार न करने वाली श्रेणी में चले जाने के कारण कम हुई।

6.19 यद्यपि, मार्च 2013 के अंत तक कारोबार में सक्रिय एनबीएफसी की संख्या में गिरावट हुई, फिर भी उनकी कुल आस्तियों और निवल स्वाधिकृत निधि में थोड़ी वृद्धि देखी गई। उनके द्वारा जुटाई गई जनता की जमाराशियों में भी वृद्धि हुई। अवशिष्ट गैर-बैंकिंग कंपनियों (आरएनबीसी) द्वारा जुटाई गई जनता की जमाराशियों में कमी आई (सारणी VI.15)।

6.20 एनबीएफसी द्वारा जुटाई गई जमाराशियों में वृद्धि के बावजूद, 2012-13 के दौरान अनुसूचित वाणिज्य बैंकों की सकल जमाराशियों और एनबीएफसी द्वारा जनता से जुटाई गई जमाराशियों के अनुपात में गिरावट जारी देखी गई। वर्ष के दौरान संकलित चलनिधि राशियों के व्यापक माप की तुलना में एनबीएफसी की जमाराशियों के अनुपात अर्थात एल3¹ में भी गिरावट हुई (चार्ट VI.2)।

¹ एल3= एनएम3+डाकघर में जमाराशियां + मीयादी ऋण + जमा प्रमाणपत्र + मीयादी जमाराशियां + एनबीएफसी के पास जनता द्वारा जमा की गई जमाराशियां।



एनबीएफसी-डी के परिचालन (आरएनबीसी को छोड़कर) वर्ष के दौरान जमाराशि लेने वाली गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (एनबीएफसी-डी) के समेकित तुलन पत्र में मामूली विस्तार हुआ

6.21 वर्ष के दौरान जमाराशियां लेने वाली गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (एनबीएफसी-डी) के समेकित तुलन पत्र में 2.2 प्रतिशत की आंशिक वृद्धि हुई है (सारणी VI.16)। 2012-13 के दौरान देयताओं के पक्ष में बैंकों के उधार में कमी आने के बाद भी वह, जमा लेने वाली गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (एनबीएफसी-डी) के लिए निधीयन का सबसे बड़ा स्रोत बना रहा। इसके पश्चात डिबेंचर तथा जनता से जुटाई गई जमाराशियां जमाराशि लेने वाली गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (एनबीएफसी-डी) के लिए सबसे महत्वपूर्ण स्रोत रहे। जमाराशि लेने वाली गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (एनबीएफसी-डी) द्वारा वित्तीय संस्थाओं से लिए गए उधार अपेक्षाकृत कम थे लेकिन वर्ष के दौरान इसमें भी नाटकीय ढंग से 170 प्रतिशत तक वृद्धि हुई। इसके विपरीत जमाराशि लेने वाली गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (एनबीएफसी-डी) द्वारा सरकार से लिए गए उधार तथा अंतर-कंपनी उधार में काफी गिरावट आई। आस्तियों के पक्ष में ऋण और अग्रिम राशियां एनबीएफसी-डी की कुल आस्तियों का लगभग तीन-चौथाई भाग रहा। वर्ष के दौरान एनबीएफसी-डी के निवेश में गिरावट मुख्यतः उनके द्वारा इक्विटी शेयरों में किये गए निवेश में गिरावट के कारण हुई। एनबीएफसी-डी द्वारा वाणिज्यिक पत्र में किये जाने वाले निवेश में भी काफी गिरावट हुई। तथापि, सरकारी

सारणी VI.16: जमाराशि स्वीकार करने वाली गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों का समेकित तुलन-पत्र

(राशि रु. बिलियन में)

मद	मार्च के अंत में		घट-बढ़	
	2012	2013 अ.	निरपेक्ष	प्रतिशत
1	2	3	4	5
1. शेयर पूंजी	36	37	1	2.2
2. रिजर्व एवं अधिशेष	182	182	0	0.3
3. जनता की जमा राशियां	57	71	14	24.2
4. डिबेंचर	238	318	79	33.3
5. बैंक से लिया गया उधार	404	343	-60	-15.0
6. वित्तीय संस्थाओं से लिया गया उधार	5	15	9	170.0
7. अंतर-कॉर्पोरेट उधार	4	3	-1	-19.1
8. वाणिज्यिक पत्र	29	29	0	1.4
9. सरकार से लिया गया उधार	55	43	-11	-20.9
10. गौण ऋण	55	62	8	14.0
11. अन्य उधारियाँ	29	34	6	20.4
12. वर्तमान देयताएं	92	70	-22	-24.4
13. प्रावधान	37	41	4	11.1
कुल देयताएं / आस्तियां	1,222	1,249	26	2.2
1. ऋण तथा अग्रिम	841	918	77	9.1
2. किराया-खरीद एवं लीज आस्तियां	37	22	-15	-39.4
3. निवेश	74	72	-2	-2.6
3.1. सरकारी प्रतिभूतियां	7	9	1	19.8
3.2. इक्विटी शेयर	18.4	17.9	-0.6	-3.1
3.3. अधिमानी शेयर	4.68	4.71	0.03	0.6
3.4. डिबेंचर एवं बांड	2	3	1	45.0
3.5. म्यूचुअल फंड की इकाइयां	0.1	2.5	2.4	2617.2 [#]
3.6. वाणिज्यिक पत्र	0.5	0.2	-0.3	-59.2
3.7. अन्य निवेश	41	35	-6	-14.4
4. नगद एवं बैंक शेष	144	146	2	1.1
4.1. उपलब्ध नगद	3	6	3	114.8
4.2. बैंक में जमा राशि	142	140	-1	-1.0
5. अन्य वर्तमान आस्तियां	103	70	-33	-31.9
6. अन्य आस्तियां	23	20	-2	-10.5

अ. : अर्न्तम # : डिनॉमिनेटर (हर) छोटा है।

टिप्पणी: प्रतिशत घटबढ़ में थोड़ा अंतर हो सकता है क्योंकि निरपेक्ष संख्याओं को रु. बिलियन में पूर्णकृत किया गया है।

स्रोत: वार्षिक/ तिमाही विवरणियां।

प्रतिभूतियों, डिबेंचरों एवं बांडों तथा म्यूचुअल फंड योजनाओं में किये गए निवेश में वृद्धि देखी गई।

6.22 वर्ष के दौरान जमाराशि लेने वाली (एनबीएफसी) की संख्या में गिरावट आई। इसके बावजूद, वर्ष के दौरान, जुटाई गई जमाराशियों और उधार राशियों में वृद्धि हुई। जमा लेने वाली गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (एनबीएफसी-डी) के बीच जहां एक ओर आस्ति वित्त कंपनियों (एएफसी) के तुलन-पत्र में विस्तार हुआ, वहीं दूसरी ओर ऋण कंपनियों (एलसी) के तुलन पत्र का संकुचन हुआ (सारणी VI.17)।

सारणी VI.17: गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनी के वर्गीकरण द्वारा जमा स्वीकार करने वाली गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों की देयताओं के मुख्य घटक
(मार्च के अंत में) (राशि रु. बिलियन में)

गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों का वर्गीकरण	कंपनियों की संख्या		जनता की जमा राशि		कुल उधार राशियां		कुल देयताएं	
	2012	2013 अ.	2012	2013 अ.	2012	2013 अ.	2012	2013 अ.
1	2	3	4	5	6	7	8	9
आस्ति वित्त कंपनियां	193	169	43 (76)	57 (80)	580 (71)	732 (86)	849 (69)	1047 (84)
ऋण प्रदान करने वाली कंपनियां	49	40	14 (24)	14 (20)	238 (29)	116 (14)	373 (31)	202 (16)
कुल	242	209	57	71	818	848	1,222	1,249

अ. : अनंतिम **टिप्पणी:** कोष्ठक में दिए गए आंकड़े कुल के प्रतिशत हिस्से हैं।

जमाराशि लेने वाली एनबीएफसी-डी की जमाराशियों के आकार के आधार पर वर्गीकरण

बड़ी एनबीएफसी-डी द्वारा जुटाई गई जनता की जमाराशियों का हिस्सा अधिक रहा

6.23 छ: बड़ी एनबीएफसी-डी, जो जमा लेने वाली गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों की कुल संख्या का मात्र लगभग 2.8 प्रतिशत है, ने मार्च 2013 के अंत तक एनबीएफसी-डी की कुल जमाराशियों की लगभग 95 प्रतिशत राशियां जुटाई (सारणी VI.18)।

एनबीएफसी-डी द्वारा जुटाई गई जमाराशियों का क्षेत्रीय फैलाव जनता की जमाराशियों का एक बड़ा हिस्सा दक्षिण क्षेत्र में जुटाया गया

6.24 क्षेत्र-वार, उत्तरी क्षेत्र में जमा लेने वाली गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (एनबीएफसी-डी) की संख्या सर्वाधिक है और

उसके बाद दक्षिण क्षेत्र का स्थान आता है। फिर भी, दक्षिण क्षेत्र ने जनता द्वारा दी गई कुल जमाराशियों का लगभग 60 प्रतिशत हिस्सा प्राप्त किया। इसी प्रकार का पैटर्न महानगरों में भी देखा जा सकता है। जहां एक ओर नई दिल्ली में जमा एनबीएफसी-डी की संख्या सबसे अधिक थी, वहीं दूसरी ओर चेन्नै में एनबीएफसी-डी द्वारा जनता से जुटाई गई जमाराशियों का 63.1 प्रतिशत का सबसे अधिक हिस्सा रहा (सारणी VI.19 एवं चार्ट VI.3)। 2012-13 के दौरान पश्चिमी क्षेत्र में एनबीएफसी-डी की संख्या में हुई कमी के बावजूद उनके द्वारा जनता से जुटाई गई जमाराशियों में काफी वृद्धि हुई है। ऐसा मुंबई में विशेषरूप से देखा गया।

सारणी VI.19: जमाराशि स्वीकार करने वाली गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों द्वारा धारित जनता की जमा राशि- क्षेत्र-वार

(राशि रु. मिलियन में)

क्षेत्र	मार्च के अंत में			
	2012		2013 अ.	
	एनबीएफसी-डी की संख्या	जनता की जमा राशि	एनबीएफसी-डी की संख्या	जनता की जमा राशि
1	2	3	4	5
उत्तरी क्षेत्र	178	1,990	152	1,865
दक्षिणी क्षेत्र	50	40,202	47	44,223
पूर्वी क्षेत्र	6	39	4	18
पश्चिमी क्षेत्र	8	14,813	6	24,746
कुल	242	57,045	209	70,851
महानगरीय शहर :				
कोलकाता	4	39	3	18
चेन्नै	31	39,338	30	43,353
मुंबई	5	14,682	3	24,604
नई दिल्ली	44	900	32	759
कुल	84	54,960	68	68,733

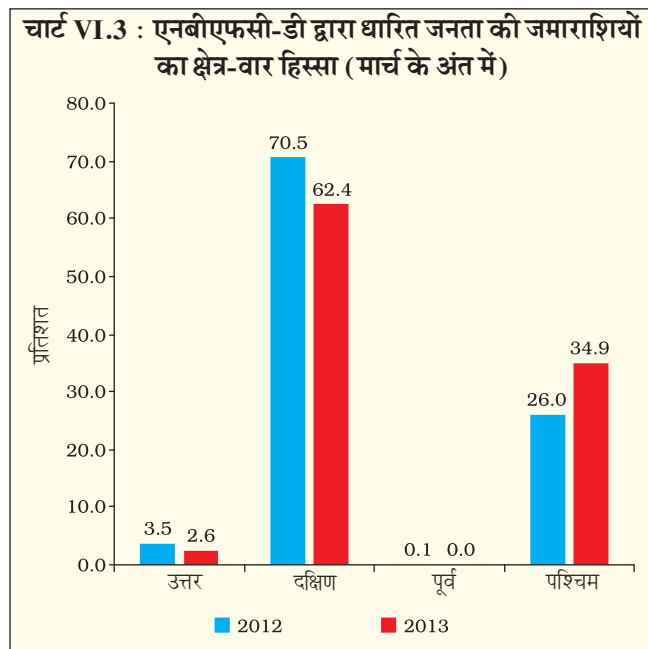
अ: अनंतिम
स्रोत : वार्षिक विवरणियां।

सारणी VI.18: जमाराशि स्वीकार करने वाली गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों द्वारा धारित जमा राशि का दायरा

(राशि रु. मिलियन में)

जमा राशि की सीमा	मार्च के अंत में			
	एनबीएफसी की संख्या		जमा राशि	
1	2012	2013 अ.	2012	2013 अ.
1. रु.5 मिलियन से कम	153	128	187 (0.3)	156 (0.2)
2. रु.5 मिलियन से अधिक और रु.20 मिलियन तक	45	39	490 (0.9)	407 (0.6)
3. रु.20मिलियन से अधिक और रु.100मिलियन तक	27	28	1,131 (2.0)	1,197 (1.7)
4. रु.100 मिलियन से अधिक और रु.200 मिलियन तक	7	6	1,085 (1.9)	928 (1.3)
5. रु.200मिलियन से अधिक और रु.500मिलियन तक	4	2	1,201 (2.1)	482 (0.7)
6. रु.500मिलियन और उससे अधिक	6	6	52,951 (92.8)	67,682 (95.5)
कुल	242	209	57,045 (100)	70,851 (100)

अ: अनंतिम
टिप्पणियां: कोष्ठक में दर्शाए गये आंकड़े प्रतिशत हिस्से को दर्शाते हैं।
स्रोत: वार्षिक/तिमाही विवरणियां।



एनबीएफसी के पास जनता की जमाराशि पर ब्याज दर 10 से 12 प्रतिशत तक की ब्याज दर वाली जनता की जमाराशियां बहुत तेजी से बढ़ी

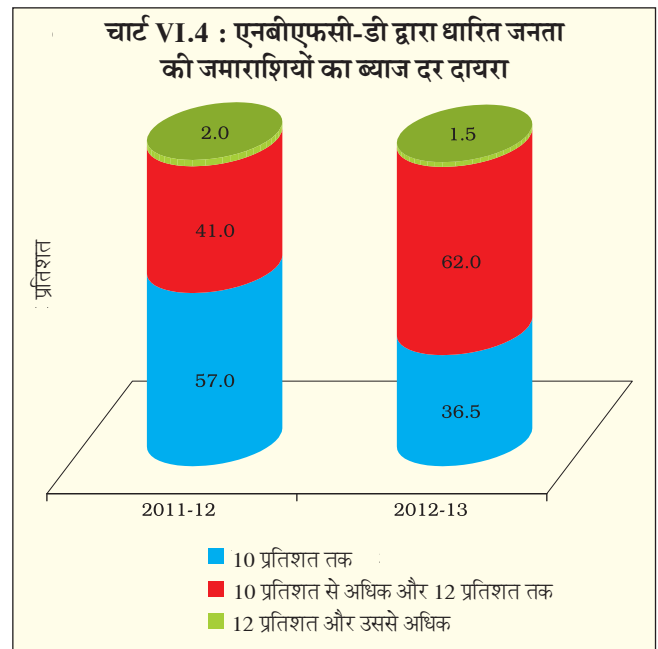
6.25 तंग चलनिधि माहौल के चलते एनबीएफसी-डी द्वारा जनता से जुटाई गई जमाराशियों के अपेक्षाकृत बड़े हिस्से की ब्याज दर 10-12 प्रतिशत के बीच रही। तदनुसार, 2012-13 के दौरान 10 प्रतिशत ब्याज दर वाली जमाराशियों का हिस्सा पिछले वर्ष के 56.9 प्रतिशत से गिरकर 36.5 प्रतिशत रह गया (सारणी VI.20 और चार्ट VI.4)।

सारणी VI.20: एनबीएफसी-डी द्वारा धारित जनता की जमाराशि-जमाराशि पर ब्याज दर दायरे के अनुसार

(राशि रु. मिलियन में)

जमाराशि पर ब्याज-दर का दायरा	मार्च के अंत में	
	2012	2013 अ
1	2	3
10 प्रतिशत तक	32,473 (56.9)	25,885 (36.5)
10 प्रतिशत से अधिक और 12 प्रतिशत तक	23,750 (41.6)	43,816 (61.8)
12 प्रतिशत और उससे अधिक	821 (1.4)	1,150 (1.6)
कुल	57,045 (100.0)	70,851 (100.0)

अ: अनंतिम
टिप्पणियां: 1. जनता की जमा राशि पर एनबीएफसी-डी 12.5 प्रतिशत से अधिक ब्याज नहीं प्रदान कर सकती।
 2. कोष्ठकों में दिए गए आंकड़े कुल का प्रतिशत हैं।
स्रोत: वार्षिक विवरणियां।



एनबीएफसी-डी द्वारा जनता से जुटाई गई जमाराशियों का परिपक्वता प्रोफाइल

6.26 वर्ष के दौरान, एनबीएफसी-डी द्वारा जनता से जुटाई गई जमाराशियों के एक बड़े हिस्से की परिपक्वता अवधि अल्पावधि से मध्यावधि तक रही। लघु-अवधि वाली जमाराशियों (एक वर्ष से कम अवधि) एवं पांच वर्ष और अधिक की अवधि वाली दीर्घावधि की जमाराशियों की हिस्सेदारी में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है (सारणी VI.21 और चार्ट VI.5)।

सारणी VI.21: एनबीएफसी-डी द्वारा धारित जनता की जमाराशि की परिपक्वता की रूपरेखा

(राशि रु. मिलियन में)

परिपक्वता अवधि	मार्च के अंत में	
	2012	2013 P
1	2	3
1. 1 वर्ष से कम	10,775 (18.9)	18,379 (25.9)
2. 1 वर्ष से अधिक और 2 वर्ष तक	15,133 (26.5)	12,917 (18.2)
3. 2 वर्ष से अधिक और 3 वर्ष तक	24,940 (43.7)	31,858 (45.0)
4. 3 वर्ष से अधिक और 5 वर्ष तक	6,191 (10.9)	6,550 (9.2)
5. 5 वर्ष और उससे अधिक*	6 (0.0)	1,148 (1.6)
कुल	57,045 (100.0)	70,851 (100.0)

अ: अनंतिम।
 *: दावा न की गई जनता की जमा राशियां शामिल हैं।
टिप्पणी: कोष्ठक में दिए गए आंकड़े संबंधित कुल के प्रति प्रतिशत को दर्शाते हैं।
स्रोत: वार्षिक विवरणियां।

सारणी VI.22: एनबीएफसी-डी की उधारियों के श्रेणी-वार स्रोत

(राशि रु. बिलियन में)

वर्गीकरण	मार्च के अंत में											
	सरकार		बैंक और वित्तीय संस्थाएं		डिबेंचर		वाणिज्य पत्र		अन्य		कुल उधार	
	2012	2013 अ.	2012	2013 अ.	2012	2013 अ.	2012	2013 अ.	2012	2013 अ.	2012	2013 अ.
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13
आस्ति वित्त कंपनियां	0 (0.0)	0 (0.0)	299 (73.2)	328 (91.6)	198 (83.3)	298 (93.7)	6 (22.7)	19 (66.3)	75 (86.6)	87 (87.5)	580 (70.9)	732 (86.3)
ऋण कंपनियां	55 (100.0)	43 (100.0)	110 (26.8)	30 (8.4)	40 (16.7)	20 (6.3)	22 (77.3)	10 (33.7)	12 (13.4)	12 (12.5)	238 (29.1)	116 (13.7)
कुल	55	43	409	358	238	318	29	29	87	100	818	848

अ. : अनंतिम

टिप्पणी: कोष्ठक में दिए गए आंकड़े संबंधित कुल के प्रति प्रतिशत को दर्शाते हैं

स्रोत: वार्षिक विवरणियां

6.27 आस्ति वित्त कंपनियों की उधारियों में हुई उल्लेखनीय वृद्धि के कारण 2012-13 के दौरान जमाराशि लेने वाली गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (एनबीएफसी-डी) की कुल उधार राशियों में वृद्धि हुई जिससे ऋण कंपनियों की उधार राशि में हुई कमी की भरपाई हुई (सारणी VI.22)। एनबीएफसी-डी ने मुख्य रूप से अस्थायी डिबेंचरों के माध्यम से बैंकों और वित्तीय संस्थाओं से उधार लिया।

एनबीएफसी-डी की आस्तियां

एनबीएफसी-डी क्षेत्र के आस्ति आकार में वर्ष के दौरान थोड़ी वृद्धि हुई

6.28 ऋण कंपनियों की आस्तियों के आकार में हुई कमी के बावजूद, मुख्य रूप से आस्ति वित्त कंपनियों की आस्तियों में वृद्धि के

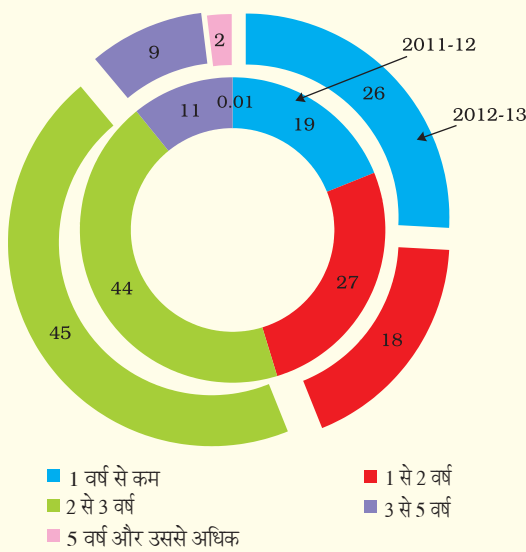
कारण 2012-13 के दौरान एनबीएफसी-डी क्षेत्र की कुल आस्तियों में थोड़ी वृद्धि हुई (सारणी VI.23)। घटक-वार देखा जाए तो कुल आस्तियों में काफी बड़ा हिस्सा अग्रिम राशियों का एवं तत्पश्चात निवेश का रहा।

एनबीएफसी-डी का आस्ति-आकार के अनुसार वितरण

एनबीएफसी-डी की आस्तियों का अत्यंत विषम वितरण

6.29 मार्च 2013 के अंत तक जमा लेने वाली लगभग 5 प्रतिशत गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों का आस्ति आकार रु. 5,000 मिलियन से अधिक था और यह जमाराशि लेने वाली कुल गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों की सकल आस्ति का लगभग 97 प्रतिशत रहा (सारणी VI.24)।

चार्ट VI.5 : एनबीएफसी-डी द्वारा धारित जनता की जमाराशियां की परिपक्वता का स्वरूप (प्रतिशत)



सारणी VI.23: एनबीएफसी के वर्गीकरण के अनुसार एनबीएफसी-डी की आस्तियों के मुख्य घटक

(राशि रु. बिलियन में)

वर्गीकरण	मार्च के अंत में					
	कुल आस्तियां		अग्रिम		निवेश	
	2012	2013 P	2012	2013 अ.	2012	2013 अ.
1	2	3	4	5	6	7
आस्ति वित्त कंपनियां	849 (69.5)	1047 (83.9)	652 (74.2)	833 (88.5)	54 (73.2)	54 (75.2)
ऋण कंपनियां	373 (30.5)	202 (16.1)	226 (25.8)	108 (11.5)	20 (26.8)	18 (24.8)
कुल	1,222	1,249	879	941	74	72

अ. अनंतिम

टिप्पणी: कोष्ठक में दिए गए आंकड़े संबंधित कुल के प्रति प्रतिशत को दर्शाते हैं।

स्रोत: वार्षिक विवरणियां ।

सारणी VI.24: आस्ति-आकार के दायरे के अनुसार एनबीएफसी-डी की आस्तियां
(मार्च के अंत में) (राशि रु. मिलियन में)

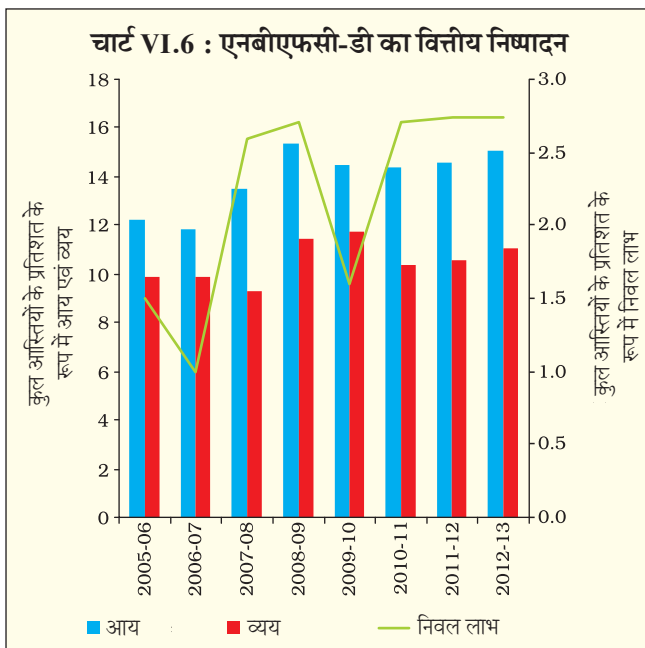
मद	कंपनियों की सं.		आस्तियां	
	2012	2013 अ	2012	2013 अ
1. रु. 2.5 मिलियन से कम	0	0	0	0
2. रु. 2.5 मिलियन से अधिक और रु. 5.0 मिलियन तक	19	12	79	49
3. रु. 5.0 मिलियन से अधिक और रु. 20 मिलियन तक	76	61	947	753
4. रु. 20 मिलियन से अधिक और रु.100 मिलियन तक	78	71	3,579	3,176
5. रु. 100 मिलियन से अधिक और रु. 500 मिलियन तक	37	36	7,903	7,921
6. रु.500 मिलियन से अधिक और रु.1000 मिलियन तक	11	12	6,865	8,438
7. रु.1000 मिलियन से अधिक और रु. 5000 मिलियन तक	7	6	14,569	16,718
8. रु. 5000 मिलियन से अधिक	14	11	11,88,518	12,11,897
कुल	242	209	12,22,460	12,48,951

अ.: अर्न्तम
स्रोत: वार्षिक विवरणियां

जमाराशि लेने वाली गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों का वित्तीय निष्पादन

जमाराशि लेने वाली गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों के वित्तीय निष्पादन में थोड़ा सुधार हुआ

6.30 वर्ष के दौरान, यद्यपि जमाराशि लेने वाली गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों के निवल लाभ में थोड़ा सुधार हुआ, फिर भी



आस्तियों पर लाभ (आरओए) पिछले वर्ष के स्तर 2.7 प्रतिशत पर बना रहा (चार्ट VI.6)। बढ़ी हुई लागत को देखते हुए, एनबीएफसी-डी के लिए वर्ष के दौरान आय की तुलना में लागत के अनुपात में भी वृद्धि हुई (सारणी VI.25)।

सुदृढ़ता संकेतक: एनबीएफसी-डी की आस्ति गुणवत्ता एनबीएफसी-डी की आस्ति गुणवत्ता में गिरावट

6.31 पिछले कुछ वर्षों से एनबीएफसी-डी की आस्ति गुणवत्ता में गिरावट देखी जा रही है। पिछले वर्ष की अनर्जक आस्तियों का उच्च स्तर जारी रहा तथा यह 2012-13 में और अधिक गिरता रहा (सारणी VI. 26)। एनबीएफसी-डी की आस्ति गुणवत्ता में गिरावट बैंकिंग क्षेत्र में अनर्जक आस्तियों में वृद्धि की प्रवृत्ति के अनुरूप रही और, अन्य बातों के साथ-साथ, आर्थिक गतिविधियों में हुई मंदी को इसका कारण बताया जा सकता है।

6.32 एनबीएफसी-डी की अनर्जक आस्तियों का अधिकांश भाग आस्ति वित्त कंपनियों (एएफसी) में केंद्रित था। 2012-13 के दौरान

सारणी VI.25: जमा स्वीकार करने वाली गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों का वित्तीय निष्पादन

मद	मार्च के अंत में	
	2012	2013 P
अ. आय (i+ii)	179	188
(i) निधि आधारित आय	177	187
(ii) शुल्क आधारित आय	(99.2)	(99.4)
	1	1
	(0.8)	(0.6)
आ. व्यय (i+ii+iii)	129	138
(i) वित्तीय	78	86
	(60.4)	(62.2)
जिसमें से, ब्याज भुगतान	6	8
	(4.4)	(6.0)
(ii) परिचालन व्यय	35	37
	(27.0)	(27.0)
(iii) अन्य	16	15
	(12.6)	(10.8)
इ. कर प्रावधान	16	16
ई. परिचालन लाभ (पीबीटी)	50	50
उ. निवल लाभ (पीएटी)	33	34
ऊ. कुल आस्तियां	1,222	1,249
ए. वित्तीय अनुपात (कुल आस्तियों के % के रूप में)		
i) आय	14.6	15.0
ii) निधि आय	14.5	14.9
iii) शुल्क आय	0.1	0.1
iv) व्यय	10.5	11.0
v) वित्तीय व्यय	6.4	6.9
vi) परिचालन व्यय	2.8	3.0
vii) कर प्रावधान	1.3	1.2
viii) निवल लाभ	2.7	2.7
ए. आय की तुलना में लागत का अनुपात	72.2	73.4

अ.: अर्न्तम.
कोष्ठक में दिए गए आंकड़े संबंधित कुल के प्रति प्रतिशत को दर्शाते हैं।
स्रोत: वार्षिक विवरणियां

सारणी VI.26: एनबीएफसी-डी के एनपीए अनुपात

(प्रतिशत)

मार्च के अंत में	कुल अग्रिमों की तुलना में सकल एनपीए	निवल अग्रिमों की तुलना में निवल एनपीए
1	2	3
2002	10.6	3.9
2003	8.8	2.7
2004	8.2	2.4
2005	5.7	2.5
2006	3.6	0.5
2007	2.2	0.2
2008	2.1	#
2009	2	#
2010	1.3	#
2011	0.7	#
2012	2.2	0.5
2013 अ	2.4	0.8

अ. : अनंतिम।

#: एनपीए की तुलना में प्रावधान अधिक है।

स्रोत: एनबीएफसी-डी की छमाही विवरणियां।

आस्ति वित्त कंपनियों से संबंधित सकल अनर्जक आस्तियों में रु. 7 बिलियन की वृद्धि हुई। ऋण कंपनियों के लिए इस राशि में केवल रु.1 बिलियन की बढ़ोतरी हुई। पिछले वर्ष अनर्जक आस्तियों में हुई उच्चतर वृद्धि के अलावा वर्ष के दौरान एनबीएफसी-डी के दोनों समूहों के लिए अनर्जक आस्ति अनुपातों में बढ़ोतरी हुई (सारणी VI.27)।

6.33 अनर्जक आस्तियों की तीन श्रेणियों में से 2012-13 के दौरान अवमानक आस्तियों का हिस्सा काफी बढ़ गया, जो आस्ति गुणवत्ता में गिरावट को दर्शाता है। आस्ति वित्त कंपनियों एवं ऋण कंपनियों -दोनों से संबंधित अवमानक आस्तियों में वृद्धि हुई (सारणी VI.28)।

सारणी VI.27: एनबीएफसी-डी के एनपीए श्रेणीवार

(राशि रु. बिलियन में)

मद	सकल अग्रिम	सकल अनर्जक आस्तियां	निवल अग्रिम	निवल अनर्जक आस्तियां	एनपीए अनुपात (सकल अग्रिमों के प्रतिशत के रूप में)	
					सकल एनपीए	निवल एनपीए
2011-12						
सभी कंपनियां	875	19	861	5	2.2	0.5
आस्ति वित्त कंपनियां	665	16	652	4	2.4	0.5
ऋण कंपनियां	210	3	209	1	1.3	0.5
2012-13 अ						
सभी कंपनियां	1,105	27	1,087	9	2.4	0.8
आस्ति वित्त कंपनियां	844	23	828	7	2.7	0.8
ऋण कंपनियां	261	4	259	2	1.5	0.7

अ : अनंतिम

स्रोत : एनबीएफसी-डी की छमाही विवरणियां।

6.34 मार्च 2013 के अंत तक, रिपोर्ट भेजने वाली कुल 209 एनबीएफसी-डी में से 206 कंपनियों ने 15 प्रतिशत से अधिक जोखिम भारित आस्तियों की तुलना में पूंजी अनुपात बनाए रखा (सारणी VI.29)। इसके अलावा, 173 कंपनियों का जोखिम भारित आस्तियों की तुलना में पूंजी अनुपात 30 प्रतिशत से अधिक था। एनबीएफसी-डी के लिए निवल स्वाधिकृत निधि की तुलना में जनता से जुटाई गई जमाराशियों का अनुपात कमोबेश मार्च 2013 के अंत में वही था (सारणी VI.30)। यद्यपि रु. 5,000 मिलियन से अधिक निवल स्वाधिकृत निधि वाली कंपनियों की संख्या घटकर

सारणी VI.28: गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों की श्रेणी के अनुसार एनबीएफसी-डी की आस्तियों का वर्गीकरण

(राशि रु. बिलियन में)

	मानक आस्तियां	अवमानक आस्तियां	संदिग्ध आस्तियां	हानि आस्तियां	सकल एनपीए	कुल ऋण एक्सपोजर
1	2	3	4	5	6	7
2011-12						
सभी कंपनियां	856	12	5	2	19	875
	(97.8)	(1.4)	(0.5)	(0.3)	(2.2)	(100)
आस्ति वित्त कंपनियां	648	10	4	2	16	665
	(97.6)	(1.5)	(0.6)	(0.3)	(2.4)	(100)
ऋण कंपनियां	208	2	1	0	3	210
	(98.7)	(0.9)	(0.3)	(0.1)	(1.3)	(100)
2012-13 अ						
सभी कंपनियां	1,078	20	4	3	27	1,105
	(97.6)	(1.8)	(0.3)	(0.3)	(2.4)	(100)
आस्ति वित्त कंपनियां	821	17	3	3	23	844
	(97.3)	(2.0)	(0.3)	(0.3)	(2.7)	(100)
ऋण कंपनियां	257	3	1	0	4	261
	(98.5)	(1.2)	(0.3)	(0.0)	(1.5)	(100)

अ. : अनंतिम

टिप्पणी : 1. कोष्ठक में दिए गए आंकड़े कुल अग्रिमों के प्रति प्रतिशत हैं।

2. प्रतिशत के आंकड़ों का पूर्णांकन किया गया है।

स्रोत: एनबीएफसी-डी की छमाही विवरणियां।

सारणी VI. 29: एनबीएफसी-डी का पूंजी पर्याप्तता अनुपात

(कंपनियों की संख्या)

सीआरएआर दायरा	2011-12			2012-13 अ.		
	एएफसी	एलसी	कुल	एएफसी	एलसी	कुल
1	2	3	4	5	6	7
1) 15 प्रतिशत से कम	2	2	4	1	2	3
2) 15 प्रतिशत से अधिक तथा 20 प्रतिशत तक	9	3	12	7	2	9
3) 20 प्रतिशत से अधिक तथा 30 प्रतिशत तक	20	4	24	19	5	24
4) 30 प्रतिशत से अधिक	166	40	206	144	29	173
कुल	197	49	246	171	38	209

अ. : अर्न्तम; एएफसी : आस्ति वित्त कंपनी; एलसी : ऋण कंपनियां;
स्रोत: छमाही विवरणियां।

सात हो गई थी, उनकी कुल निवल स्वाधिकृत निधि में थोड़ी बढ़ोतरी हुई (सारणी VI.31)।

अवशिष्ट गैर-बैंकिंग कंपनियों (आरएनबीसी)

आरएनबीसी के अन्य कारोबारी मॉडल अपनाने की प्रक्रिया जारी है

6.35 आरएनबीसी की आस्तियों में मार्च 2013 को समाप्त वर्ष के दौरान थोड़ी कमी आई (सारणी VI.32)। उनकी आस्तियों में मुख्य रूप से सावधि जमाराशियां/अनुसूचित वाणिज्य बैंकों के जमा प्रमाण-पत्र और उसके पश्चात बांडों/डिबेंचरों तथा भार-रहित

सारणी VI.30: वर्गीकरण के अनुसार एनबीएफसी-डी की जनता की जमाराशियों की तुलना में निवल स्वाधिकृत निधियां

(राशि रु. बिलियन में)

वर्गीकरण	निवल स्वाधिकृत निधि		जनता की जमा राशियां	
	2011-12	2012-13 अ.	2011-12	2012-13 अ.
1	2	3	4	5
आस्ति वित्त कंपनियां	137	170	43 (0.31)	57 (0.34)
ऋण कंपनियां	81	50	14 (0.17)	14 (0.28)
कुल	218	219	57 (0.26)	71 (0.32)

अ. अर्न्तम

टिप्पणी : कोष्ठकों में दिए गए आंकड़े निवल स्वाधिकृत निधि की तुलना में जनता की जमा राशियों का अनुपात हैं।

स्रोत : वार्षिक विवरणियां।

अनुमोदित प्रतिभूतियों में निवेश शामिल हैं। 2012-13 के दौरान आरएनबीसी की निवल स्वाधिकृत निधि कमोबेश पिछले वर्ष के स्तर पर बनी रही। 2012-13 के दौरान आरएनबीसी की आय तथा व्यय - दोनों में कमी आई। चूंकि आरएनबीसी की कुल आय में कमी कुल व्यय में हुई कमी की तुलना में कम थी, इसलिए उनके परिचालन लाभ में कुछ वृद्धि हुई। इसके अलावा, पिछले वर्ष की तुलना में कम कर (टैक्स) भरने के कारण, 2012-13 के दौरान आरएनबीसी की निवल आय (कर पश्चात लाभ) में 9.1 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

सारणी VI.31: एनबीएफसी-डी की जनता की जमाराशियों की तुलना में निवल स्वाधिकृत निधि का दायरा

(मार्च के अंत में)

(राशि रु. मिलियन में)

निवल स्वाधिकृत निधि का दायरा	2012			2013 अ.		
	कंपनियों की संख्या	निवल स्वाधिकृत निधि	जनता की जमा राशियां	कंपनियों की संख्या	निवल स्वाधिकृत निधि	जनता की जमा राशियां
1	2	3	4	5	6	7
निवल स्वाधिकृत निधि का दायरा						
रु. 2.5 मिलियन तक	1	-0.93	1	1	-0.2	0.8
रु. 2.5 मिलियन से अधिक और रु. 20 मिलियन तक	122	951	324	97	776	233
रु. 20 मिलियन से अधिक और रु. 100 मिलियन तक	77	3,196	1,342	72	2,830	1,174
रु. 100 मिलियन से अधिक और रु. 500 मिलियन तक	23	5,099	1,253	23	5,144	1,327
रु. 500 मिलियन से अधिक और रु. 1000 मिलियन तक	4	2,823	817	4	2,582	912
रु. 1000 मिलियन से अधिक और रु. 5000 मिलियन तक	6	12,451	14,096	5	10,020	14,392
रु. 5000 मिलियन से अधिक	9	1,93,461	39,212	7	1,97,907	52,812
कुल	242	2,17,981	57,045	209	2,19,259	70,851

अ. : अर्न्तम

स्रोत : वार्षिक विवरणियां।

सारणी VI.32: अवशिष्ट गैर-बैंकिंग कंपनियों का प्रोफाइल
(राशि रु. मिलियन में)

मद	मार्च के अंत में		घट-बढ़	
	2011-12	2012-13अ	निरपेक्ष	प्रतिशत
1	2	3	4	5
अ. आस्तियां (i से v)	75,430	73,138	-2,292	-3.0
(i) भार-रहित अनुमोदित प्रतिभूतियों में निवेश	8,376	7,186	-1,190	-14.2
(ii) अनुसूचित वाणिज्य बैंकों / सरकारी वित्तीय संस्थाओं की मीयादी जमाराशियां/ जमा प्रमाणपत्रों में निवेश	13,897	13,113	-784	-5.6
(iii) सरकारी कंपनियों/ सरकारी क्षेत्र के बैंकों/ सार्वजनिक वित्तीय संस्थाओं / निगमों के डिबेंचर/बांड/वाणिज्यिक पत्र	7,513	7,513	0	0.0
(iv) अन्य निवेश	4,333	2,839	-1,494	-34.5
(v) अन्य आस्तियां	41,312	42,490	1,178	2.9
आ. निवल स्वाधिकृत निधि	30,790	30,879	89	0.3
इ. कुल आय (i+ii)	3,324	3,140	-184	-5.5
(i) निधि आय	2,939	2,897	-42	-1.4
(ii) शुल्क आय	385	243	-142	-36.9
ई. कुल व्यय (i+ii+iii)	1,662	1,455	-207	-12.5
(i) वित्तीय लागत	461	133	-328	-71.1
(ii) परिचालन लागत	518	658	140	27.1
(iii) अन्य लागत	684	661	-23	-3.4
उ. कराधान	570	494	-76	-13.2
ऊ. परिचालन लाभ (पीबीटी)	1,666	1,690	24	1.4
ए. निवल लाभ(पीएटी)	1,096	1,196	100	9.1

अ. : अर्न्तितम ; पीबीटी: कर पूर्व लाभ; पीएटी : करोत्तर लाभ।
स्रोत : वार्षिक विवरणियां।

सारणी VI.33: अवशिष्ट गैर-बैंकिंग कंपनियों द्वारा धारित सार्वजनिक जमाराशियां - क्षेत्र-वार

(राशि रु. बिलियन में)

क्षेत्र	मार्च के अंत के अनुसार			
	2011-12		2012-13 अ.	
1	आरएनबीसी की संख्या	जनता की जमाराशियां	आरएनबीसी की संख्या	जनता की जमाराशियां
2	3	4	5	5
उत्तरी	1	21 (50.0)	1	17 (47.8)
पूर्वी	1	21 (50.0)	1	18 (52.2)
कुल	2	43	2	35
महानगरीय शहर				
कोलकाता	1	21	1	18

अ. : अर्न्तितम।

टिप्पणी : कोष्ठक में दिए गए आंकड़े संबंधित कुल के प्रतिशत अनुपात हैं।

स्रोत : वार्षिक विवरणियां।

एनबीएफसी-एनडी-एसआई

डिबेंचरों, बैंकों तथा वित्तीय संस्थाओं से उधार के माध्यम से एनबीएफसी-एनडी-एसआई के संसाधनों में वृद्धि

6.38 वर्ष 2012-13 के दौरान एनबीएफसी-एनडी-एसआई के समेकित तुलन पत्र में 19.5 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई। देयता पक्ष में एनबीएफसी-एनडी-एसआई द्वारा लिये गए उधार में (जमानती और गैर-जमानती), जोकि कुल देयताओं का दो-तिहाई भाग से अधिक है, वर्ष के दौरान 22.2 प्रतिशत की उल्लेखनीय वृद्धि हुई

आरएनबीसी की जमाराशियों का क्षेत्रीय पैटर्न

6.36 मार्च 2013 के अंत में पूर्वी क्षेत्र तथा उत्तरी क्षेत्र में दो आरएनबीसी थीं। विनियमन संबंधित शर्तों को ध्यान में रखते हुए, आरएनबीसी अन्य कारोबारी मॉडल को अपनाने की प्रक्रिया में हैं और जून 2015 के अंत तक इन कंपनियों को जमाकर्ताओं के प्रति सकल देयताओं को कम करके 'शून्य' करना है। तदनुसार, 2012-13 के दौरान इन दोनों आरएनबीसी द्वारा धारित जनता की जमाराशियां कम होती गईं (सारणी VI.33)।

आरएनबीसी का निवेश पैटर्न

6.37 2012-13 के दौरान आरएनबीसी के निवेश में कमी आई, जोकि पिछले पैरा में उल्लिखित विनियमन संबंधी शर्तों के अनुकूल रहा (सारणी VI.34)।

सारणी VI.34: अवशिष्ट गैर-बैंकिंग कंपनियों के निवेश का स्वरूप (मार्च के अंत में)

(राशि रु. मिलियन में)

मद	2011-12	2012-13अ
1	2	3
जमाकर्ताओं के प्रति समग्र देयताएं (एएलडी)	42,650	35,014
(i) भार-रहित अनुमोदित प्रतिभूतियां	8,376 (19.6)	7,186 (20.5)
(ii) बैंकों में सावधि जमाराशियां	13,897 (32.6)	13,113 (37.5)
(iii) सरकारी कंपनी/सरकारी क्षेत्र के बैंक/ सरकारी वित्तीय संस्था/ निगम के बांड या डिबेंचर या वाणिज्यिक पत्र	7,513 (17.6)	7,513 (21.5)
(iv) अन्य निवेश	4,333 (10.2)	2,839 (8.1)

अ. : अर्न्तितम

टिप्पणियां : कोष्ठक में दिए गए आंकड़े जमाकर्ताओं के प्रति समग्र देयताओं (एएलडी) का प्रतिशत दर्शाते हैं।

स्रोत : वार्षिक विवरणियां।

भारत में बैंकिंग की प्रवृत्ति एवं प्रगति संबंधी रिपोर्ट 2012-13

(सारणी VI.35)। एनबीएफसी-एसआई ने मुख्य रूप से डिबेंचरों के माध्यम से और उसके बाद बैंकों तथा वित्तीय संस्थाओं से उधार, वाणिज्यिक पत्र एवं अंतर-कंपनी कर्ज के माध्यम से उधार लिया। एनबीएफसी-एनडी-एसआई का गैर-जमानती उधार, जोकि कुल उधार के आधे भाग से थोड़ा कम है, में काफी वृद्धि हुई और वर्ष 2012-13 के दौरान इसमें जमानती उधार में हुई वृद्धि से भी अधिक

सारणी VI.35: एनबीएफसी-एनडी-एसआई का समेकित तुलन-पत्र
(मार्च के अंत में) (राशि रु. बिलियन में)

मद	2012	2013 अ	घट-बढ़ (प्रतिशत)
1	2	3	4
1. शेयर पूंजी	524	592	12.9
2. रिजर्व और अधिशेष	1,891	2,068	9.3
3. कुल उधार	6,530	7,980	22.2
अ. जमानती उधार	3,627	4,332	19.4
अ.1. डिबेंचर	1,746	2,112	21.0
अ.2. बैंकों से उधार	1,487	1,704	14.6
अ.3. वित्तीय संस्थाओं से उधार	98	128	30.0
अ.4. उपचित ब्याज	64	96	49.7
अ.5. अन्य	232	292	25.7
आ. गैर-जमानती उधार	2,902	3,648	25.7
आ.1. डिबेंचर	1,221	1,614	32.2
आ.2. बैंकों से उधार	456	460	0.9
आ.3. वित्तीय संस्थाओं से उधार	28	63	126.4
आ.4. रिश्तेदारों से उधार	13	11	-13.0
आ.5. अंतर-कॉर्पोरेट उधार	242	247	1.8
आ.6. वाणिज्यिक पत्र	353	441	25.1
आ.7. उपचित ब्याज	71	99	39.8
आ.8. अन्य	519	713	37.4
4. चालू देयताएं एवं प्रावधान	408	537	31.6
कुल देयताएं / कुल आस्तियां	9,353	11,177	19.5
आस्तियां			
1. ऋण तथा अग्रिम	6,143	7,497	22.0
1.1. जमानती	4,642	5,852	26.1
1.2. गैर-जमानती	1,501	1,645	9.6
2. किराया खरीद आस्तियां	640	786	22.8
3. निवेश	1,544	1,742	12.8
3.1. दीर्घावधि निवेश	1,170	1,284	9.7
3.2. चालू निवेश	374	458	22.4
4. नगद और बैंक शेष	334	358	7.2
5. अन्य चालू आस्तियां	536	623	16.2
6. अन्य आस्तियां	156	172	9.9
जापन मदें			
1. पूंजी बाजार एक्सपोजर (सीएमई)	833	907	8.9
जिसमें से : इक्विटी शेयर	267	275	2.9
2. कुल आस्तियों के प्रतिशत के रूप में पूंजी बाजार एक्सपोजर	8.9	8.1	
3. लीवरेज अनुपात	2.87	3.20	
अ. अर्न्तम			
टिप्पणियां : 1. यहां दर्शाए गए आंकड़े 354 एनडी-एसआई से संबंधित हैं जिनकी मार्च 2012 और मार्च 2013 की अवधि में निरंतर रिपोर्टिंग की गई है और यह आंकड़े एनडी-एसआई क्षेत्र के 95 प्रतिशत से अधिक हिस्से को दर्शाते हैं।			
2. प्रतिशत आंकड़ों को पूर्णांकित किया गया है।			
स्रोत : एनबीएफसी-एनडी-एसआई की मासिक विवरणियां।			

तेजी से वृद्धि हुई। गैर-जमानती उधार मुख्य रूप से डिबेंचरों और उसके बाद बैंकों से उधार, वाणिज्यिक पत्र, अंतर-कंपनी उधार और वित्तीय संस्थाओं से उधार द्वारा लिये गए। गैर-जमानती प्रकारों में 2012-13 के दौरान "वित्तीय संस्थाओं से लिए गए उधार" में लगभग दोगुनी (126.4 प्रतिशत) वृद्धि हुई, जबकि गैर-जमानती डिबेंचरों और वाणिज्यिक पत्रों से लिए गए उधारों में क्रमशः 32.2 और 25.1 प्रतिशत की वृद्धि हुई। वर्ष 2012-13 के दौरान बैंकों से लिए गए गैर-जमानती उधारों में थोड़ी वृद्धि हुई।

6.39 वर्ष 2012-13 के दौरान एनबीएफसी-एनडी-एसआई की आस्तियों की स्थिति और मजबूत हुई। इन आस्तियों का एक बड़ा हिस्सा ऋणों और अग्रिमों का था, जिसमें 22 प्रतिशत की वृद्धि हुई। किराया-खरीद आस्तियों और निवेश में वृद्धि के कारण भी एनबीएफसी-एनडी-एसआई की आस्तियों में वृद्धि हुई। एनबीएफसी-एनडी-एसआई क्षेत्र के लीवरेज अनुपात में 3.20 की अल्प वृद्धि हुई थी। वर्ष के दौरान कुल आस्तियों के प्रतिशत के रूप में पूंजी बाजार में इस क्षेत्र का एक्सपोजर 8.9 प्रतिशत से घटकर 8.1 प्रतिशत रह गया।

एनबीएफसी-एनडी-एसआई का क्षेत्रवार उधार

उत्तरी क्षेत्र निधियों का मुख्य स्रोत बना रहा

6.40 एनबीएफसी-एनडी-एसआई के क्षेत्रवार-उधार का विश्लेषण करने से उत्तरी तथा पश्चिमी क्षेत्रों के दबदबे का पता चलता है। मार्च 2013 को समाप्त वर्ष के दौरान इन दोनों का हिस्सा कुल उधार के 70 प्रतिशत से अधिक रहा है। अन्य क्षेत्रों की तुलना में पूर्वी और दक्षिणी क्षेत्रों की उधारियों में अधिक वृद्धि देखी गई है (सारणी VI.36)।

सारणी VI.36: एनबीएफसी-एनडी-एसआई की उधारियां - क्षेत्र-वार

क्षेत्र	मार्च के अंत में		घट-बढ़ (प्रतिशत)
	2012	2013 अ.	
1	2	3	4
उत्तरी अंचल	3,169	3,767	18.9
पूर्वी अंचल	340	432	26.9
पश्चिमी अंचल	1,734	2,145	23.7
दक्षिणी अंचल	1,287	1,637	27.2
कुल उधार राशियां	6,530	7,980	22.2
अ.: अर्न्तम			
स्रोत : एनबीएफसी-एनडी-एसआई की मासिक विवरणियां।			

वित्तीय निष्पादन

एनबीएफसी-एनडी-एसआई की वित्तीय स्थिति में सुधार परिलक्षित हुआ

6.41 एनबीएफसी-एनडी-एसआई क्षेत्र के वित्तीय निष्पादन में सुधार हुआ जैसा कि 2012-13 के दौरान उनके निवल लाभ में बढ़ोतरी से परिलक्षित होता है (सारणी VI.37)। कुल आय एवं कुल आस्तियों के प्रतिशत के रूप में निवल लाभ में वर्ष के दौरान थोड़ी वृद्धि हुई।

6.42 जहां एक ओर एनबीएफसी-एनडी-एसआई की कुल आस्तियों की तुलना में उसकी सकल अनर्जक आस्तियों के अनुपात में थोड़ी वृद्धि हुई, वहीं दूसरी ओर वर्ष के दौरान कुल आस्तियों की तुलना में निवल अनर्जक आस्तियों के अनुपात में कमी आई (सारणी VI.38)।

सारणी VI.37: एनबीएफसी-एनडी-एसआई का वित्तीय निष्पादन (राशि रु. बिलियन में)

मद	मार्च के अंत में	
	2012	2013 अ.
1	2	3
1. कुल आय	988	1,246
2. कुल व्यय	745	930
3. निवल लाभ	171	222
4. कुल आस्तियां	9,353	11,177
वित्तीय अनुपात (प्रतिशत)		
(i) कुल आस्तियों की तुलना में आय	10.6	11.2
(ii) कुल आस्तियों की तुलना में व्यय	8.0	8.3
(iii) कुल आय की तुलना में निवल लाभ	17.3	17.8
(iv) कुल आस्तियों की तुलना में निवल लाभ	1.8	2.0
अ. : अनंतिम		
स्रोत : एनबीएफसी-एनडी-एसआई की मासिक विवरणियां।		

सारणी VI.38: एनबीएफसी-एनडी-एसआई का अनर्जक आस्ति अनुपात (प्रतिशत)

मद	मार्च के अंत में	
	2012	2013 अ.
1	2	3
(i) सकल अग्रिमों की तुलना में सकल एनपीए	2.12	2.20
(ii) निवल अग्रिमों की तुलना में निवल एनपीए	1.29	1.09
(iii) कुल आस्तियों की तुलना में सकल एनपीए	1.54	1.63
(iv) कुल आस्तियों की तुलना में निवल एनपीए	0.93	0.80
अ. : अनंतिम		
स्रोत : एनबीएफसी-एनडी-एसआई की मासिक विवरणियां (रु.1 बिलियन और उससे अधिक के पूंजी आकार वाली एनबीएफसी)।		

6.43 मार्च 2013 के अंत की स्थिति के अनुसार रिपोर्ट करने वाली कंपनियों में से अधिकांश ने जोखिम भारित आस्तियों की तुलना में पूंजी अनुपात के रूप में मापित पूंजी पर्याप्तता को नियमानुसार 15 प्रतिशत के न्यूनतम स्तर पर बनाए रखा। रिपोर्ट करने वाली कुल कंपनियों में से केवल 12 प्रतिशत कंपनियों का जोखिम भारित आस्तियों की तुलना में पूंजी अनुपात 15 प्रतिशत से कम है और इनमें से लगभग सभी या तो निवेश कंपनियां हैं या फिर ऋण कंपनियां (सारणी VI.39) हैं। एनबीएफसी-एनडी-एसआई के पास अपने कारोबार को और बढ़ाने के लिए अपनी पूंजी का उपयोग करने के लिए पर्याप्त अवसर हैं। बैंकिंग प्रणाली का एनबीएफसी-एनडी-एसआई में एक्सपोजर मुख्यतः मीयादी और कार्यकारी पूंजीगत ऋण के रूप में है; और इनमें से अधिकांश ऋण राष्ट्रीयकृत बैंकों और स्टेट बैंक समूह द्वारा दिए गए हैं (सारणी VI.40)। एनबीएफसी-एनडी-एसआई द्वारा बैंकिंग क्षेत्र को जारी किये गए डिबेंचरों और वाणिज्यिक पत्रों में सामान्यतः नये निजी क्षेत्र के बैंकों एवं विदेशी बैंकों ने क्रमशः अभिदान किया है।

6.44 पिछले कुछ वर्षों में देश में स्वर्ण ऋण में काफी बढ़ोतरी हुई है। स्वर्ण के बदले ऋण देने के व्यापार में बैंकों का दबदबा

सारणी VI.39: एनबीएफसी-एनडी-एसआई का पूंजी पर्याप्तता अनुपात - श्रेणी वार (कंपनियों की संख्या)

सीआरएआर का दायरा	2011-12					2012-13 अ					
	एएफसी	आईसी	आईएफसी	एलसी	कुल	एएफसी	आईसी	आईडीएफ	आईएफसी	एलसी	कुल
1) 15 % से कम	-	30	-	18	48	1	34	-	-	15	50
2) 15 % से अधिक और 20 % तक	5	8	1	23	37	5	7	-	1	24	37
3) 20 % से अधिक और 30 % तक	4	12	2	20	38	4	10	-	2	30	46
4) 30 % से अधिक	7	178	1	88	274	6	182	1	1	95	285
कुल	16	228	4	149	397	16	233	1	4	164	418

अ. अनंतिम, - : निल को सूचित करता है।
 एएफसी : आस्ति वित्त कंपनियां; एलसी - ऋण कंपनियां; आईसी : निवेश कंपनियां; आईएफसी : इन्फ्रास्ट्रक्चर वित्त कंपनियां; आईडीएफ - आधारभूत संरचना ऋण निधि एनबीएफसी।
 स्रोत : अर्द्ध-वार्षिक विवरणियां।

सारणी VI.40 : एनबीएफसी-एनडी-एसआई क्षेत्र का बैंक एक्सपोजर
(मार्च 2013 के अंत में)

(राशि रु. बिलियन में)

बैंक समूह	मीयादी ऋण	कार्यशील पूंजी कर्ज	डिबेंचर	वाणिज्यिक पत्र	अन्य	जोड़
1	2	3	4	5	6	7
अ. राष्ट्रीयकृत बैंक	709.4	2.7	26.6	0.1	27.3	766.1
आ. स्टेट बैंक समूह	250.3	136.3	0.2	0.0	0.2	386.9
इ. निजी क्षेत्र के पुराने बैंक	212.6	8.2	0.1	0.0	0.0	221.0
ई. निजी क्षेत्र के नए बैंक	338.5	26.9	61.1	0.3	19.8	446.5
उ. विदेशी बैंक	50.7	0.7	0.4	50.2	0.5	102.4
सभी बैंक	1,561.4	174.6	88.4	50.6	47.8	1,922.9

स्रोत : एनबीएफसी-एनडी-एसआई की मासिक विवरणी।

होने के बाद भी एनबीएफसी-एनडी-एसआई द्वारा स्वर्ण के बदले ऋण में काफी वृद्धि हुई है। वर्ष के दौरान स्वर्ण ऋण व्यापार से जुड़े एनबीएफसी-एनडी-एसआई की संख्या छः से बढ़कर आठ हो गई है। पोर्टफोलियो के अत्यधिक संकेंद्रण के कारण उत्पन्न वित्तीय स्थिरता से संबंधित चिंताओं को ध्यान में रखते हुए ऐसे एनबीएफसी-एनडी-एसआई के लिए विवेकपूर्ण दिशा-निर्देश जारी

किए गए ताकि वे अपने तुलन-पत्र में कुल आस्तियों की तुलना में स्वर्ण ऋण के प्रतिशत को दर्शाएं और मूल्य की तुलना में ऋण (एलटीवी) अनुपात को 60 प्रतिशत से अधिक न होने दें। इसके साथ ही, ग्राहकों की शिकायतों और चिंताओं के निवारण के लिए एनबीएफसी को संशोधित उचित व्यवहार संहिता का पालन करने के लिए भी कहा गया (बॉक्स VI.2)।

बॉक्स VI.2:

स्वर्ण की जमानत पर उधार देने वाली गैर- बैंकिंग वित्तीय कंपनियों का विनियमन

हाल के वर्षों में स्वर्ण ऋण देने वाली गैर- बैंकिंग वित्तीय कंपनियों ने, अपने तुलन पत्रों के आकार तथा देश भर में भौगोलिक पहुँच -दोनों दृष्टि से महत्वपूर्ण वृद्धि दर्ज की है। मार्च 2013 के अंत तक स्वर्ण ऋण देने वाली गैर- बैंकिंग वित्तीय कंपनियों की आस्तियों का हिस्सा, एनबीएफसी-एनडी-एसआई क्षेत्र की कंपनियों की कुल परिसंपत्तियों का लगभग 5 प्रतिशत तथा ऋण कंपनियों की कुल परिसंपत्तियों का लगभग 28.6 प्रतिशत था। अपने कारोबार में वृद्धि पर जोर देने के लिए, ये एनबीएफसी, बैंकों से लिये जाने वाले उधार तथा खुदरा निवेशकों को जारी किए जाने वाले अपरिवर्तनीय डिबेंचर के माध्यम जुटाई गई सार्वजनिक निधियों पर अधिकांशतः निर्भर रहे। स्वर्ण ऋण देने वाली गैर- बैंकिंग वित्तीय कंपनियों के 'एकल उत्पाद' व्यवसाय मॉडल की बैंक निधियों पर अधिक निर्भरता से संकेंद्रण जोखिम (क्रेडिट, बाजार, तरलता और परिचालन जोखिमों से उत्पन्न) और प्रणालीगत चिंताएं उत्पन्न होती हैं। तदनुसार, भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा स्वर्ण के आयात से संबंधित मुद्दों के अध्ययन के लिए तथा स्वर्ण ऋण से जुड़े विद्यमान विनियामक मानकों तथा सिफारिश किए गए संशोधनों की समीक्षा करने हेतु एक कार्यकारी दल (अध्यक्ष: श्री के.यू.बी. राव) का गठन किया गया। कार्यकारी दल ने अपनी सिफारिशों के साथ अंतिम रिपोर्ट दिनांक 6 फरवरी 2013 को प्रस्तुत की।

वित्तीय स्थिरता से जुड़ी कुछ चिंताओं को दूर करने के लिए स्वर्ण ऋण क्षेत्र की एनबीएफसी को सूचित किया गया कि वे 60 प्रतिशत से अधिक ऋण-मूल्य अनुपात (लोन टू वैल्यू अनुपात) बनाए रखें तथा उनकी कुल आस्तियों की तुलना में ऐसे ऋणों का प्रतिशत तुलन- पत्र में प्रकट करें। यदि किसी एनबीएफसी द्वारा दिया गया ऋण उसकी कुल वित्तीय आस्तियों का 50 प्रतिशत या उससे अधिक है तो वह 01 अप्रैल 2014 तक कम से कम 12 प्रतिशत की टियर 1 पूंजी बनाए रखे। इसके अलावा, सभी एनबीएफसी को यह अनुदेश

दिया गया है कि वे स्वर्ण के सिक्के, प्राइमरी गोल्ड / बुलियन की जमानत पर उधार न दें।

इसके अलावा, उपर्युक्त कार्यकारी दल द्वारा की गई सिफारिशों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी एनबीएफसी के लिए उचित व्यवहार संहिता पर जारी विद्यमान दिशानिर्देशों को संशोधित किया गया तथा संशोधित दिशानिर्देशों को 18 फरवरी 2013 को जारी किया गया। इसके अनुसार ऐसी गैर - बैंकिंग वित्तीय कंपनियों को अपने- अपने बोर्ड के अनुमोदन से एक शिकायत निवारण प्रणाली को लागू करना होगा तथा शिकायत निवारण अधिकारी का नाम सभी शाखाओं पर विशिष्ट रूप से प्रदर्शित किया जाना चाहिए। ऐसी एनबीएफसी को यह भी सूचित किया गया है कि वे उचित व्यवहार संहिता को विशिष्ट रूप से क्षेत्रीय भाषाओं में प्रदर्शित करें। इसके अलावा, इन्हें ऋणों के मूल्य निर्धारण तथा केवाईसी मानकों के अनुपालन में पारदर्शिता बनाए रखने के लिए भी कहा गया है। एनबीएफसी को यह भी जोर देकर कहा गया है कि वे स्वर्ण की जमानत पर पर्याप्त सुरक्षा तथा बीमा कराएं तथा अपने बोर्ड द्वारा अनुमोदित नीलामी नीति को लागू करें। उन्हें ऋण करार में ही नीलामी की प्रक्रिया का खुलासा करने तथा स्वयं अपनी नीलामी में भाग न लेने की भी सलाह दी गई है। इसके अलावा, मई 2013 में यह स्पष्ट किया गया कि एनबीएफसी द्वारा प्राथमिक स्वर्ण, स्वर्ण बुलियन, स्वर्ण आभूषण, स्वर्ण सिक्के, गोल्ड एक्सचेंज ट्रेडेड फंड (ईटीएफ) की इकाइयों तथा गोल्ड म्यूच्युअल फंड की इकाइयों सहित किसी भी रूप में स्वर्ण की खरीद के लिए किसी भी प्रकार का अग्रिम नहीं दिया जाएगा।

दशानिर्देशों को दिनांक 16 सितंबर 2013 को फिर से संशोधित किया गया। तदनुसार, स्वर्ण की सुरक्षा तथा उधारकर्ताओं की सुविधा सुनिश्चित करने के

(जारी...)

(...समाप्त)

लिए स्वर्ण ऋण देने वाली एनबीएफसी को यह भी कहा गया है कि वे जमानत के तौर पर स्वीकार किए गए स्वर्ण आभूषणों के सुरक्षित भंडारण के लिए एक उपयुक्त एवं पूर्णतः सुरक्षित बुनियादी ढांचा उपलब्ध कराएं। स्वर्ण ऋण देने वाली ऐसी गैर - बैंकिंग वित्तीय कंपनियों, जो 1,000 से अधिक की संख्या में अपनी शाखाएं खोलना चाहती हैं, को रिजर्व बैंक से पूर्व अनुमोदन प्राप्त करने का आदेश दिया गया है। कोई भी नई शाखा खोलने की अनुमति तब तक नहीं दी जाएगी जबतककि स्वर्ण आभूषणों की समुचित सुरक्षा तथा भंडारण के लिए पर्याप्त प्रबंधन न किया गया हो, जिसमें सेफ डिपॉजिट वॉल्ट का निर्माण करना भी शामिल है। स्वर्ण आभूषणों के मूल्य निर्धारण में पारदर्शिता लाने तथा मनमानेपन से बचने के लिए गैर - बैंकिंग वित्तीय कंपनियों को मूल्य के आकलन के लिए एक मानक विधि को अपनाने की आवश्यकता है। तदनुसार, जमानत के रूप में स्वीकार किए जाने वाले स्वर्ण आभूषण का मूल्य निर्धारण, दि बॉम्बे बुलियन एसोसिएशन लिमिटेड द्वारा पूर्ववर्ती 30 दिनों में उद्धृत 22 कैरेट स्वर्ण के दिनांत के मूल्यों के औसत के आधार पर किया जाना होगा। इसके अलावा,

गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों द्वारा जमानत के तौर पर स्वर्ण स्वीकार करते समय, उसकी शुद्धता और संपार्श्विकीकृत स्वर्ण का वजन उल्लेख करते हुए उधारकर्ता को अपने लेटरहेड पर एक लिखित प्रमाणपत्र दिया जाना चाहिए। स्वर्ण ऋण देने वाली गैर बैंकिंग वित्तीय कंपनियों को स्वर्ण आभूषणों के स्वामित्व से जुड़ी अपेक्षाओं को पूरा करने तथा केवाईसी मानदंडों के अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए बोर्ड के द्वारा अनुमोदित नीतियों को लागू करने के लिए कहा गया है। नीलामी प्रक्रिया में और परिशोधन करने की सलाह दी गई है। एनबीएफसी को अधिक मूल्य के ऋण (एक लाख तथा उससे ऊपर) को चेक के माध्यम से ही भुगतान करने तथा 2-3 मिनटों में ऋण उपलब्ध कराने का दावा करने जैसे भ्रामक विज्ञापनों को निषिद्ध करने की सलाह दी गई है। इसके अलावा, स्वर्ण की जमानत पर उधार देने वाली सभी गैर - बैंकिंग वित्तीय कंपनियों को ₹5 लाख से ऊपर के सभी लेन देनों के लिए उधारकर्ता के पैस कार्ड की प्रति अवश्य प्राप्त करने के लिए कहा गया है। ऐसी गैर बैंकिंग वित्तीय कंपनियों को उनकी सभी शाखाओं में दस्तावेजी प्रक्रिया को मानक बनाने की भी सलाह दी गई है।

4. प्राथमिक व्यापारी

6.45 जून 2013 के अंत तक वित्तीय बाजारों में कुल 21 प्राथमिक व्यापारी कार्यरत थे जिनमें से 13 बैंकों के द्वारा संचालित थे और उन्हें बैंक-पीडी कहा जाता है। शेष आठ गैर-बैंकिंग संस्थाएं थी, जिन्हें स्टैंडएलोन पीडी के नाम से जाना जाता है एवं वे भारतीय रिजर्व बैंक अधिनियम 1934 की धारा 45 I ए के अंतर्गत पंजीकृत थे।

प्राथमिक व्यापारियों का परिचालन एवं कार्य निष्पादन

6.46 2012-13 के दौरान, भारत सरकार की दिनांकित प्रतिभूतियों तथा प्राथमिक व्यापारियों के ट्रेजरी बिल दोनों में बिड-टू-कवर अनुपात पिछले वर्ष की तुलना में थोड़ा अधिक रहा। सभी प्राथमिक व्यापारी वर्ष की पहली तथा दूसरी छमाही दोनों में नकदी प्रबंधन बिल तथा खजाना बिल - दोनों के सम्मिलित रूप से निर्धारित न्यूनतम 40 प्रतिशत के सफलता अनुपात (बोली लगाने की प्रतिबद्धता हेतु स्वीकार किए गए बिड) को प्राप्त करने में कामयाब रहे। पिछले वर्ष की तुलना में खजाना-बिलों की नीलामियों में सफलता का अनुपात थोड़ा अधिक था। (सारणी VI.41)

6.47 पिछले वर्ष जारी की गई ₹5,100 बिलियन मूल्य की प्रतिभूतियों की तुलना में वर्ष 2012-13 के दौरान भारत सरकार के सामान्य बाजार उधार कार्यक्रम के तहत ₹5,580 बिलियन मूल्य की दिनांकित प्रतिभूतियां जारी की गईं। दिनांकित प्रतिभूतियों की नीलामियों में प्राथमिक व्यापारियों का शेयर (जारी प्रतिभूतियों

की तुलना में स्वीकृत बिड) वर्ष 2011-12 के 47.7 प्रतिशत से बढ़कर वर्ष 2012-13 में 51.1 प्रतिशत हो गया। वर्ष 2011-12 में ₹121.1 बिलियन के आंशिक न्यागमन के 14 उदाहरणों की तुलना में वर्ष 2012-13 में ₹18.3 बिलियन के मात्र दो ऐसे उदाहरण थे जो वर्ष के दौरान बांड मार्केट की अनुकूल स्थिति दर्शाते थे।

सारणी VI.41: प्राथमिक बाजार में प्राथमिक व्यापारियों का कार्य-निष्पादन (मार्च के अंत में)

मद	(राशि रु. बिलियन में)	
	2011-12	2012-13
1	2	3
खजाना बिल तथा नगदी प्रबंध बिल*		
बोली प्रतिबद्धता	7.296	7.346
वास्तव में प्रस्तुत बोलियां	13.506	15.887
बिड टु कवर अनुपात	2.2	2.6
स्वीकृत बोलियां	4.271	4.350
सफलता अनुपात (प्रतिशत में)	58.6	59.2
केंद्र सरकार की प्रतिभूतियां		
अधिसूचित राशि	5,100	5,580
वास्तव में प्रस्तुत बोलियां	6,932	8,795
बिड टु कवर अनुपात	1.3	1.5
प्राथमिक व्यापारियों की स्वीकृत बोलियां	2,432	2,852
प्राथमिक व्यापारियों का हिस्सा (प्रतिशत में)	47.7	51.1

*2011-12 में जारी किए गए सीएमबी रु.930 बिलियन के थे।

स्रोत : प्राथमिक व्यापारियों द्वारा प्रस्तुत विवरणियां।

स्टैंडएलोन प्राथमिक व्यापारियों का कार्य निष्पादन

द्वितीयक बाजार में पीडी की व्यापारिक गतिविधियों की हिस्सेदारी में कमी आई

6.48 द्वितीयक बाजार में प्राथमिक व्यापारियों ने अलग-अलग रूप से सरकारी प्रतिभूतियों में 5 गुना तथा खजाना बिलों में 10 गुना अपेक्षित न्यूनतम वार्षिक कुल कारोबार² (आउटराइट एवं रिपो लेन-देन) का स्तर हासिल किया। पीडी ने खजाना बिल में छह गुना तथा सरकारी प्रतिभूतियों में तीन गुना न्यूनतम वार्षिक एकमुश्त कारोबार अनुपात भी प्राप्त किया। वर्ष 2012-13 के दौरान सरकारी प्रतिभूतियों के द्वितीयक बाजार में उच्चतर कारोबार होने के बावजूद, बैंकों तथा अन्य वित्तीय संस्थाओं जैसे बीमा कंपनियों की व्यापारिक गतिविधियों में हुई वृद्धि के कारण संपूर्ण बाजार लेनदेन में स्टैंडएलोन प्राथमिक व्यापारियों के हिस्से में गिरावट आई। वर्ष के दौरान स्टैंडएलोन प्राथमिक व्यापारियों का हिस्सा एकमुश्त लेनदेनों में 26.3 प्रतिशत से घटकर 16.4 प्रतिशत तथा रिपो लेन-देनों में 20.3 प्रतिशत से घटकर 19.2 प्रतिशत हो गया (सारणी VI.42)।

स्टैंडएलोन पीडी की निधियों के स्रोत तथा उनका उपयोग

प्राथमिक व्यापारियों द्वारा वाणिज्य पत्रों, कॉरपोरेट बाँड बाजार तथा ईक्विटी में किए गए निवेश में उल्लेखनीय वृद्धि हुई

6.49 2012-13 में प्राथमिक व्यापारियों की पूंजी में 2.2 प्रतिशत की गिरावट आने के बावजूद, इसकी क्षतिपूर्ति उनकी आरक्षित निधियों में तेज वृद्धि एवं अधिशेष के कारण हो गई जिससे उनकी निवल स्वाधिकृत निधि में 5.8 प्रतिशत तक की वृद्धि हुई। निधियों की प्राप्ति का मुख्य स्रोत उधार ही रहा है जो कुल निधियों का 84 प्रतिशत था। प्राथमिक व्यापारियों द्वारा लिए गए सुरक्षित तथा असुरक्षित ऋणों में बढ़ोतरी तो हुई परन्तु वे पिछले वर्ष की तुलना में काफी कम थे। निधियों के उपयोग के मामले में, वाणिज्य पत्र, बांडों तथा ईक्विटी में किए गए निवेश में काफी वृद्धि हुई (सारणी VI.43)।

सारणी VI.42: सरकारी क्षेत्र के द्वितीयक बाजार में स्टैंडएलोन प्राथमिक व्यापारियों का कार्य-निष्पादन (मार्च के अंत में)

(राशि रु. बिलियन में)

मद	2011-12	2012-13
1	2	3
एकमुश्त		
स्टैंडएलोन प्राथमिक व्यापारियों का टर्नओवर	18,381	21,643
बाजार सहभागियों का टर्नओवर	69,764	1,31,841
प्राथमिक व्यापारियों का हिस्सा (प्रतिशत)	26.3	16.4
रिपो		
स्टैंडएलोन प्राथमिक व्यापारियों का टर्नओवर	15,245	20,724
बाजार सहभागियों का टर्नओवर	75,278	1,08,055
प्राथमिक व्यापारियों का हिस्सा (प्रतिशत)	20.3	19.2
कुल		
स्टैंडएलोन प्राथमिक व्यापारियों का टर्नओवर	33,625	4,23,667
बाजार सहभागियों का टर्नओवर	1,45,042	23,98,959
प्राथमिक व्यापारियों का हिस्सा (प्रतिशत)	23.2	17.7

टिप्पणियाँ : 1. प्रतिशत घटबढ़ में थोड़ा अंतर हो सकता है क्योंकि कुल संख्याओं को रु. बिलियन में पूर्णांकित किया गया है।
2. पूर्णांकन के कारण हो सकता है कि घटकों का जोड़ कुल से मेल न खाए।

स्रोत : भारतीय समाशोधन निगम लिमिटेड।

स्टैंडएलोन प्राथमिक व्यापारियों का वित्तीय कार्य-निष्पादन आय में हुई तीव्र वृद्धि से लाभ में बढ़ोतरी

6.50 वर्ष 2012-13 के उत्तरार्द्ध के दौरान हुई गिरती ब्याज दर के कारण व्यापारिक लाभ में भारी वृद्धि के चलते वर्ष 2012-13 में स्टैंडएलोन प्राथमिक व्यापारियों के कर पश्चात लाभ में 146 प्रतिशत की उल्लेखनीय वृद्धि हुई (सारणी VI.44)। कर पश्चात लाभ में सुधार को प्रतिबिम्बित करते हुए निवल हैसियत पर प्रतिफल तथा औसत आस्तियों पर मिलने वाले प्रतिफल में भी अच्छी बढ़ोतरी देखी गयी (सारणी VI.45)। वर्ष 2012-13 में प्राथमिक व्यापारियों का लागत- आय अनुपात 2011-12 के 44.1 से घटकर 27.2 हो गया जो कि उनकी दक्षता में हुई वृद्धि दर्शाता है।

6.51 प्राथमिक व्यापारियों द्वारा धारित जोखिम भारित आस्तियों में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई जो उनकी निवल पूंजीगत निधियों में हुई मामूली वृद्धि से कहीं अधिक थी। इससे उनका जोखिम भारित आस्तियों की तुलना में पूंजी अनुपात 53.8 प्रतिशत (मार्च 2012

² टर्नओवर अनुपात की गणना वर्ष के दौरान द्वितीयक बाजार में औसत माह-अंत स्टॉक में कुल क्रय और विक्रय के अनुपात के रूप में की जाती है।

सारणी VI.43: स्टैंडएलोन प्राथमिक व्यापारियों की निधियों के स्रोत और उपयोग

(राशि रु. मिलियन में)

मद	मार्च के अंत में			प्रतिशत घट-बढ़	
	2011	2012	2013	2012	2013
1	2	3	4	5	6
निधियों के स्रोत	1,30,320	2,03,810	2,43,231	56.4	19.3
1 पूंजी	15,210	15,080	14,743	-0.8	-2.2
2 रिजर्व और अधिशेष	18,890	20,490	22,832	8.4	11.4
3 ऋण (क+ख)	96,220	1,68,240	2,05,657	74.9	22.2
क) जमानती	63,520	1,13,970	1,36,325	79.4	19.6
ख) गैर जमानती	32,700	54,260	69,331	66.0	27.8
निधियों का उपयोग	1,30,320	2,03,810	2,43,231	56.4	19.3
1 अचल आस्तियां	380	370	325	-1.8	-12.2
2 निवेश (क+ख+ ग)	98,520	1,45,080	2,13,576	47.3	47.2
क) सरकारी प्रतिभूतियां	86,430	1,33,320	1,77,403	54.2	33.1
ख) वाणिज्यिक पत्र	100	250	2,442	149.4	876.8
ग) कॉर्पोरेट बांड	11,990	11,510	33,730	-4.0	193.0
3 ऋण और अग्रिम	4,260	19,380	9,911	354.9	-48.9
4 गैर चालू आस्तियां	0	2,970	2,214		-25.5
5 ईक्विटी, म्यूचुयुअल फंड आदि	250	160	1,241	-34.7	675.6
6 अन्य*	26,910	35,850	15,965	33.2	-55.5

* अन्य = नगदी + जमा प्रमाण-पत्र + बैंक शेष + उपचित ब्याज + आस्थगित कर अस्तियां - चालू देयताएं और प्रावधान

टिप्पणियां : 1. पूर्णांकन के कारण प्रतिशत घटबढ़ में थोड़ा अंतर हो सकता है

2. पूर्णांकन के कारण हो सकता है कि घटकों का जोड़ कुल से मेल न खाए।

स्रोत : प्राथमिक व्यापारियों की वार्षिक रिपोर्ट ।

के अंत में) से घटकर 39.4 प्रतिशत (मार्च 2013 के अंत में) हो गया (सारणी VI.46)। तथापि, यह अनुपात सभी स्टैंडएलोन

सारणी VI.44: स्टैंडएलोन प्राथमिक व्यापारियों का वित्तीय निष्पादन

(राशि रु. मिलियन में)

मद	2011-12	2012-13	घट-बढ़	
			राशि	प्रतिशत
1	2	3	4	5
क. आय (i से iii)	15,470	22,742	7,272	47.0
i) ब्याज और बट्टा	13,820	17,912	4,092	29.6
ii) कारोबारी लाभ	640	4,276	3,636	568.1
iii) अन्य आय	1,010	553	-457	-45.2
ख. व्यय (i + ii)	13,070	17,023	3,953	30.2
i) ब्याज	11,180	14,883	3,703	33.1
ii) स्थापना तथा प्रशासनिक लागत सहित अन्य व्यय	1,890	2,140	250	13.2
कर पूर्व लाभ	2,400	5,542	3,142	130.9
करोत्तर लाभ	1,540	3,795	2,255	146.4

टिप्पणियां: 1. पूर्णांकन के कारण प्रतिशत घटबढ़ में थोड़ा अंतर हो सकता है

2. पूर्णांकन के कारण हो सकता है कि घटकों का जोड़ कुल से मेल न खाए।

स्रोत : प्राथमिक व्यापारियों द्वारा प्रस्तुत विवरणियां ।

सारणी VI.45: स्टैंडएलोन प्राथमिक व्यापारियों के वित्तीय संकेतक

(राशि रु. मिलियन में)

संकेतक	2011-12 2012-13	
	2	3
1	2	3
i) निवल लाभ	1,540	3,790
ii) औसत आस्तियां	1,97,460	2,52,170
iii) औसत आस्तियों पर प्रतिलाभ (प्रतिशत में)	0.8	1.5
iv) निवल मालियत पर प्रतिलाभ (प्रतिशत में)	4.4	10.1
v) लागत-आय अनुपात	44.1	27.2

प्राथमिक व्यापारियों के लिए विनियामक शर्तों के अधीन निर्धारित 15 प्रतिशत के अनुपात से काफी ऊपर रहा।

सारणी VI. 46: स्टैंडएलोन प्राथमिक व्यापारियों का सीआरएआर

(राशि रु. मिलियन में)

विवरण	मार्च के अंत में	
	2012	2013
1	2	3
1. कुल निवल पूंजीगत निधियां	39,290	42,280
2. कुल जोखिम भारत आस्तियां	72,980	1,07,401
क) क्रेडिट जोखिम	37,420	49,570
ख) बाजार जोखिम	35,560	57,831
3. सीआरएआर (प्रतिशत)	53.8	39.4

5. समग्र मूल्यांकन

6.52 गैर - बैंकिंग वित्तीय क्षेत्र में समग्रतः तुलन पत्रों में काफी विस्तार देखा गया है; यद्यपि कुछ कंपनियों के इस क्षेत्र से बाहर हो जाने तथा कुछ के द्वारा अन्य कारोबारी मॉडल को अपनाने की वजह से समेकन हुआ। 2012-13 में वित्तीय संस्थाओं तथा एनबीएफसी के निवल लाभ में भी वृद्धि हुई। वर्ष के दौरान एनबीएफआई क्षेत्र के एक बड़े भाग की आस्तियों की समग्र गुणवत्ता में गिरावट आई जो आंशिक रूप से समग्र अर्थव्यवस्था में आई मंदी दर्शाती है। पूंजी

पर्याप्तता के संदर्भ में समस्त एनबीएफआई क्षेत्र सुखद स्थिति में था। स्टैंडएलोन प्राथमिक व्यापारियों के निवल लाभ में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई। विनियामक हस्तक्षेप का उद्देश्य वित्तीय स्थिरता से संबंधित चिंताओं को दूर करना एवं क्षेत्र के स्वस्थ विकास को प्रेरित करना था। रिज़र्व बैंक सार्वजनिक नोटिस जारी करने के अलावा, आउटरीच और संवेदीकरण कार्यक्रम भी आयोजित करता रहा है ताकि आम जनता को व्यक्तियों, अनिगमित निकायों और कंपनियों द्वारा काल्पनिक मुनाफे के फर्जी वादों का शिकार होने से सावधान किया जा सके।